Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :270)

अनुवाद: वह जिसे चाहता है हिक्मत प्रदान करता है। और जो भी हिक्मत दिया जाए तो उसे बहुत भलाई दी गई अक्ल वालों के सिवा कोई नसीहत नहीं पकड़ता ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 40

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

23 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी 4 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 4 अक्तूबर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

इल्हामी इबारतों में मरयम और ईसा से अभिप्राय मैं ही हूं, मेरे ही विषय में कहा गया कि हम उसे निशान बना देंगे और यह भी कहा गया कि यह वही ईसा इब्ने मरयम है जो आने वाला था, जिसके विषय में लोग सन्देह करते हैं। पर सत्य यही है और आने वाला यही है और संदेह, मात्र मूर्खता के कारण है जो ख़ुदा के रहस्यों को नहीं समझते। ये शक्लों के पुजारी हैं वास्तविकता पर उनकी दृष्टि नहीं ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हे प्रियजनो ! विचार करो और ख़ुदा से डरो। यह मनुष्य का काम कदापि नहीं। यह सूक्ष्म और गहरा दर्शन मनुष्य की समझ और कल्पना से श्रेष्ठतर है। यदि बराहीन अहमदिया लिखने के समय जिस पर एक लम्बा समय गुज़र गया, मुझे इस योजना का विचार होता तो मैं उसी बराहीन अहमदिया में यह क्यों लिखता कि ईसा मसीह ईब्ने मरयम आकाश से दोबारा आएगा। चूंकि ख़ुदा को ज्ञान था कि इस रहस्य का ज्ञान होने से प्रमाण कमज़ोर हो जाएगा । इसलिए यद्यपि कि उसने बराहीन अहमदिया के तृतीय भाग में मेरा नाम मरयम रखा फिर जैसा कि बराहीन अहमदिया से स्पष्ट है कि दो वर्ष तक मरयमी विशेषता में पालन पोषण हुआ और पर्दे में बढ़ता रहा। फिर जब उस पर दो वर्ष व्यतीत हो गए तो जैसा कि बराहीन अहमदिया के चौथे भाग के पृष्ठ 496 में लिखा है कि मरमय की भांति ईसा की रूह मुझ में फूंकी गई और उपमा स्वरूप मुझे हामिला ठहराया गया और आख़िर कई माह पश्चात जो दस माह से अधिक नहीं इस ख़ुदाई कलाम द्वारा जिसका उल्लेख सब के अंत में बराहीन अहमदिया के चौथे भाग में पृष्ठ 556 पर है मुझे मरयम से ईसा बनाया गया। अत: इस प्रकार से मैं इब्ने मरयम ठहरा और ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया के समय में इस गुप्त रहस्य से मुझे अवगत नहीं कराया। हालांकि ख़ुदा की सम्पूर्ण वही(ईशवाणी) जो इस रहस्य को समेटे हुए थी मुझ पर उतरी और बराहीन अहमदिया में लिखी गयी, परन्तु मुझे उसके अर्थ और उसके क्रम के बारे में अवगत नहीं कराया गया। इसीलिए मैंने मुसलमानों की परंपरागत आस्था का उल्लेख बराहीन अहमदिया में कर दिया ताकि वह मेरी सरलता और आडम्बरहीनता पर साक्षी हो। वह लिखना जो ईशवाणी पर आधारित न था मात्र रस्मी था विरोधियों के लिए प्रमाण योग्य नहीं, क्योंकि मुझे स्वयं अन्तर्यामी होने का दावा नहीं, जब तक कि स्वयं ख़ुदा मुझे न समझा दे। अत: उस समय तक ख़ुदा की इच्छा यही थी कि बराहीन अहमदिया के कुछ इल्हामी रहस्य मेरी समझ में न आते, परन्तु जब समय आ गया तो वे रहस्य मुझे समझाए गए। तब मैंने देखा कि मेरे इस मसीह मौऊद होने के दावे में कोई नई बात नहीं। यह वही दावा है जिसका बराहीन अहमदिया में बारम्बार स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। इस स्थान पर एक अन्य ईशवाणी पर भी प्रकाश डालता हूं । मुझे स्मरण नहीं कि मैंने वह ईशवाणी अपनी किसी पत्रिका या विज्ञापन में प्रकाशित की है या नहीं। परन्तु यह स्मरण है कि मैंने सैंकड़ों लोगों को सुनाया था और मेरी याददाश्त की ईशवाणियों में विद्यमान है और वह उस समय की है जबकि ख़ुदा ने प्रथम मुझे मरयम की उपाधि दी फिर रूह फूँकने की ईशवाणी की, तत्पश्चात यह ईशवाणी हुई थी-

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا

''फ़अजाअहल मख़ाज़ो इला जिज़्इन्नख़्लते क़ालत यालयतनी मित्तो क़ब्ला हाज़ा व कुन्तो नस्यम्मन्सिय्या''

अर्थात फिर मरयम को, जिससे अभिप्राय मैं हूं प्रसव की पीड़ा खजूर की ओर ले आई अर्थात सामान्य प्रजाजन, मूर्ख और बुद्धिहीन ज्ञानियों से सामना हुआ, जिनके पास ईमान का फल न था, जिन्होंने काफ़िर कहकर अपमान किया, गालियां दीं और एक तूफ़ान मचा दिया। तब मरयम ने कहा कि काश मैं इस से पूर्व मर जाती और मेरा नाम और पहचान भी शेष न रहती। यह उस शोर की ओर संकेत है जो प्रारम्भ में मौलवियों की ओर से सामूहिक तौर पर किया गया और वे इस दावे को सहन न कर सके। उन्होंने मुझे हर प्रयत्न और हर प्रयास से मिटाना चाहा। तब उस समय मूर्खों का शोर-शराबा देखकर जो बेचैनी और व्याकुलता मेरे हृदय को हुई, इस स्थान पर ख़ुदा ने उसी का नक्शा खींचा है। उससे संबंधित और भी ईशवाणियां थीं जैसा-

لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا فَرِيًّا ۔ مَا كَانَ اَبُوْكَ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكَ بَغِيًّا ۔

''लक़द जेते शयइन फ़रिय्या माकाना अबूकिमरअ सौइन वमा कानत् उम्मुके बग़िय्या'' और फिर इसके साथ ही ईशवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 521में मौजूद है और वह यह है-

الیس اللہ بکاف عبدہ ولنجعلہ ایۃ للناس ورحمۃ منا وکان امرا مقضیا ۔ قول الحق الذی فیہ تمترون ۔

''अलयसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू वलेनज्अल्हो आयतन लिन्नासे व रहमतम्मिन्ना व काना अमरम्मक़ज़ियया क़ौलल हक़्क़िल्लज़ी फ़ीहे तमतरून ''

(देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 516 लाइन 12 व 13.)

अनुवाद : और लोगों ने कहा कि हे मरयम तूने यह कैसा घृणित और अप्रसन्ननीय कार्य किया जो सदमार्ग से परे है। तेरे [1] मां-बाप तो ऐसे न थे। परन्तु ख़ुदा अपने भक्त को इन आरोपों से बरी करेगा और हम उसे लोगों के लिए एक निशान बना देंगे। यह बात प्रारम्भ से सुनिश्चित थी और ऐसा ही होना था। यह ईसा इब्ने मरयम हैं जिसमें लोग संदेह कर रहे हैं। यही सत्य बात है। यह सब बराहीन अहमदिया की इबारत है और यह ईशवाणी वास्तव में क़ुर्आन की आयतें हैं, जो हज़रत ईसा और उनकी माता से संबंधित हैं। इन आयतों में जिस ईसा की पैदायश को लोगों ने अवैध ठहराया उसी के संदर्भ में ख़ुदा का कथन है कि हम उसे अपना निशान बनाएंगे और

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और स्वीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-12)

☆ ख़लीफतुल मसीह महान और उच्च व्यक्तित्व के मालिक हैं और आप का भाषण उतना ही शानदार था। उन्होंने जमाअत अहमदिया की सकारात्मक चीजों के बारे में बताया और इस संदर्भ में भी बात की कि कुछ लोग शायद इस मस्जिद के निर्माण से भयभीत होंगे मैं तो जमाअत अहमदिया को अच्छी तरह जानती हूँ इसलिए मस्जिद निर्माण मेरे लिए कोई कष्टप्रद बात लेकिन यह सच है कि कुछ लोग हैं जो अपनी अज्ञानता के कारण मस्जिदों से डरते हैं। और मुझे लगता है कि ख़लीफा के भाषण को सुनने के बाद, किसी को भी किसी के दिल में मस्जिद के सन्दर्भ में कोई शक का कण मात्र न बचा होगा बल्कि उसे शांति मिलेगी।

ख़लीफा के शब्दों ने दर्शकों को इस्लाम का असली चेहरा दिखाया। इस रूप में मुझे यह बात अच्छी लगी कि आप के धर्म का एक बहुत बड़ा हिस्सा मानवता की सेवा करना है और जब आपके ख़लीफा ने बताया कि आपकी जमाअत इस के अनुसार काम कर रहा है। और मैं अफ्रीका में पानी के मूल्य को जानने में बहुत रूचि रखता था। साथ ही स्कूल और अस्पताल जो आप चल रहे हैं, यह साबित करता है कि आपके ख़लीफा के केवल शब्द नहीं हैं बल्कि वे भी उनका अनुसरण करते हैं।

माल्मो में मस्जिद महमूद का उद्घाटन, इस अवसर पर हुज़ूर अनवर का स्वीडिश सम्माननीय लोगों से सम्बोधन, मेहमानों की प्रतिक्रयाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

हुज़ूर अनवर के भाषण पर लोगों की प्रतिक्रियाएं

महोदया ने कहा: खलीफतुल मसीह महान और उच्च व्यक्तित्व के मालिक हैं और आप का भाषण उतना ही शानदार था। उन्होंने जमाअत अहमदिया की सकारात्मक चीजों के बारे में बताया और इस संदर्भ में भी बात की कि कुछ लोग शायद इस मस्जिद के निर्माण से भयभीत होंगे मैं तो जमाअत अहमदिया को अच्छी तरह जानती हूँ इसलिए मस्जिद निर्माण मेरे लिए कोई कष्टप्रद बात लेकिन यह सच है कि कुछ लोग हैं जो अपनी अज्ञानता के कारण मस्जिदों से डरते हैं। और मुझे लगता है कि ख़लीफा के भाषण को सुनने के बाद, किसी को भी किसी के दिल में मस्जिद के सन्दर्भ में कोई शक का कण मात्र न बचा होगा बल्कि उसे शांति मिलेगी।

* एक मेहमान दोस्त माइकल जिसके माता पिता पोलिश हैं लेकिन वह ख़ुद स्वीडन में पैदा हुए हैं उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

मेरे विचार में ख़लीफतुल मसीह का भाषण हर लिहाज़ से सम्पूर्ण था। इस में शांति और एक दूसरे की सहायता करने का सन्देश था। जिस तरह से ख़लीफा ने स्कूल और अस्पताल और जल पंप इत्यादि जैसे मानव सेवाओं का उल्लेख किया, इसका मेरे दिल पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।

मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं लेकिन अधिकांश लोग नहीं रखते, इसलिए मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि इस प्रकार का व्यक्ति स्वीडन आया है जो ईश्वर पर और एक निर्माता पर दृढ़ ईमान रखता है। ख़िताब को सुनने के बाद, अब मैं इस्लाम से डरता नहीं हूं, बल्कि केवल चरमपंथियों से डरता हूं। मुझ पर स्पष्ट हो गया है कि दोनों एक-दूसरे से अलग हैं। ख़लीफा ने समझाया कि कुरआन यह नहीं कहता कि लोगों को मार डालो, बल्कि यह सिखाता है कि सभी लोग बराबर हैं और दूसरों का ध्यान रखना ईमान का हिस्सा है।

* मेहमानों में से एक, हुसैन अब्दुल्ला, जिन का योगोसलाविया से संबंधित थे, ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि: ख़लीफा के शब्दों ने मुझे छू लिया है और मैं उन की हर बात से सहमत हूं। उन्होंने इस्लाम की शैली का बचाव किया जैसा अन्य मुसलमान नहीं कर सकते हैं। उन्होंने सहिष्णुता पर और दूसरों की मदद पर ज़ोर दिया और कहा कि इस्लाम इस तरह से प्रतिरक्षा करता है कि हमें सभी जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए। आज के आयोजन में शामिल होने के बाद, मुझे आपके ख़लीफा पर गर्व है और अहमदिया जमाअत पर गर्व है। लोगों को इस्लाम के बारे में ग़लतफहमी है और यह कोई साधारण काम नहीं कि उन्हें ठीक किया जाए, लेकिन ख़लीफा इस काम में सब से आगे हैं ।

* एक स्वीडिश मेहमान बेहर ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि: "इस शाम ने मुझे बहुत प्रभावित किया है और मैंने सीखा है कि इस्लाम क्या है।" ख़लीफा ने कुछ ही मिनटों में कई मुद्दों पर बात की और उस रंग में इस्लाम का बचाव किया जैसा मैंने पहले कभी नहीं सुना था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कुछ मुस्लिम भी बुरे हैं। लेकिन ख़लीफा ने कुरआन को यह साबित करने के लिए संदर्भित किया कि ऐसे लोग कुरआन की शिक्षाओं के ख़िलाफ जा रहे हैं। आप से मसीहा और मस्जिद के लक्ष्यों के बारे में सुनना बहुत दिलचस्प था। यदि आपके ख़लीफा के सारांश की व्याख्या करने के लिए कोई शब्द है, तो यह "शांति" है।

* एक स्वीडिश राजनेता रॉबर्ट साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: क्या ही अच्छा भाषण था? आपके ख़लीफा एक हिक्मत वाले और शांतिपूर्ण व्यक्ति हैं और बहुत शान्ति वाले हैं। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आपको एक वास्तविक मुस्लिम से शांति महसूस करनी चाहिए। और जब मैं ख़लीफा से मिला, तो मुझे वास्तव में शांति महसूस हुई। यही कारण है कि मुझे पता है कि वह एक सच्चे मुस्लिम हैं। मुझे उन के नज़दीक रहने और उसकी आवाज सुनने से बहुत सुरक्षित महसूस हुआ।

महोदय ने कहा: ख़लीफा के शब्दों ने दर्शकों को इस्लाम का असली चेहरा दिखाया। इस रूप में मुझे यह बात अच्छी लगी कि आप के धर्म का एक बहुत बड़ा हिस्सा मानवता की सेवा करना है और जब आपके ख़लीफा ने बताया कि आपकी जमाअत इस के अनुसार काम कर रहा है। और मैं अफ्रीका में पानी के मूल्य को जानने में बहुत रूचि रखता था। साथ ही स्कूल और अस्पताल जो आप चल रहे हैं, यह साबित करता है कि आपके ख़लीफा के केवल शब्द नहीं हैं बल्कि वे भी उनका अनुसरण करते हैं।

महोदय ने कहा: जो इस्लाम का उल्लेख ख़लीफा ने क्या वे इससे बिल्कुल अलग है जो मैं दूसरे मुसलमानों में देखा है, लेकिन यह भी कह सकता हूँ कि मैं पहले कभी किसी को शांति या रवादारी के बारे में इतना विस्तार के साथ वर्णन करते हुए नहीं सुना, चाहे वे मुस्लिम हैं, ईसाई किसी अन्य धर्म के हैं।

* एक स्वीडिश मेहमान श्री जारो ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: एक बहुत ही शांतिपूर्ण समारोह और संदेश था। ख़लीफा ने इस्लाम को बहुत अच्छे रंग में बचाया और कहा कि इस्लाम में "सलात" शब्द का अर्थ ही "शांति" है। उन्होंने पड़ोसियों के मानवाधिकारों और सहिष्णुता तथा अधिकारों के बारे में बात की। उन्होंने अपने अहमदियों को यह भी बताया कि वे क्या उम्मीद करते हैं। अगर अहमदी अपने ख़लीफा के आदेश का पालन करते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह मस्जिद शांति की शक्ति के रूप में कार्य करेगी।

* एक स्वीडिश मेहमान श्रीमती पेट्रा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण बहुत अच्छा था। वे सब लोग जो यहां थे वे आपके ख़लीफा से आश्वस्त थे, और मुझे उम्मीद है कि आपस संदेश को दूसरों को पहुंचाएंगे। मैंने आपके ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद की पुस्तक शांति का मार्ग का अध्ययन किया है, और मुझे यह पुस्तक बहुत असामान्य लगी है। एक धार्मिक नेता का राजनीतिक

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्हम्दुलिल्लाह आज से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना शुरू हो रहा है और हमें अल्लाह तआला एक और जलसा सालाना में शामिल होने की तौफीक़ अता फ़रमा रहा है ।

जलसा सालाना का उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अस्सलाम ने वर्णन फरमाते हुए यह फरमाया है कि यह जलसा कोई सांसारिक मेला नहीं है और ना ही यहां जमा होना किसी सांसारिक उद्देश्य और संख्या दिखाने के लिए है या दुनिया पर कोई सांसारिक प्रभाव डालने के लिए है। बल्कि यहां आने वालों को, यहां जमा होने वालों को अल्लाह तआला के लिए जमा होना चाहिए ताकि जहां अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक प्यास बुझाने वाले हों और अपने ज्ञान और आध्यात्मिकता में वृद्धि करने वाले हों वहां अल्लाह तआला के बन्दों के अधिकारों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने वाले और इन अधिकारों को अदा करने की कोशिश करने वाले हों।

जलसा सालाना के मेज़बानों काम करने वालों और इसी तरह जलसा में शामिल होने वाले मेहमानों के लिए कुरआन हदीस तथा हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेशों के हवाले से बहुत प्रमुख नसीहतें।

प्रत्येक काम करने वाला भी और प्रत्येक अहमदी भी जो जलसा में शामिल हो रहा है इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का व्यवहारित नमूना दिखा कर तब्लीग़ का माध्यम बनता है। सुन्दर शिक्षा दिखाने का माध्यम बनता है। अतः इस दृष्टि से आप सब शामिल होने वाले भी और ड्यूटी देने वाले भी एक खामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं।

केवल जलसा में शामिल हो कर आप मेहमान नहीं बन जाते हैं। अगर आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की शिक्षा पर अमल नहीं कर रहे आप की बातों पर अमल नहीं कर रहे आपके जलसा के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर रहे हो आप हज़ार बार कहते रहें कि हम जलसा पर आए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमान हैं, आप मेहमान नहीं हैं क्योंकि आप के व्यवहार साबित कर रहे हैं कि आप की वे हरकतें नहीं हैं

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 7 सितम्बर 2018 ई. स्थान - DM Arena (Karlsruhe), जर्मनी।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्हम्दुलिल्लाह आज से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना शुरू हो रहा है और हमें अल्लाह तआला एक और जलसा सालाना में शामिल होने की तौफीक अता फ़रमा रहा है

जलसा सालाना क्या है? हम सालों से सुनते आ रहे हैं बल्कि जब से जलसा सालाना के आयोजन का आरंभ हुआ है सवा सौ वर्ष से अधिक समय पहले से यही सुनते आ रहे हैं कि जलसा सालाना का उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अस्सलाम ने वर्णन फरमाते हुए यह फरमाया है कि "यह जलसा कोई सांसारिक मेला नहीं है और ना ही यहां जमा होना किसी सांसारिक उद्देश्य और संख्या दिखाने के लिए है या दुनिया पर कोई सांसारिक प्रभाव डालने के लिए है।"

(उद्धृत शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 395) बल्कि यहां आने वालों को, यहां जमा होने वालों को अल्लाह तआला के लिए जमा होना चाहिए ताकि जहां अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक प्यास बुझाने वाले हों और अपने ज्ञान और आध्यात्मिकता में वृद्धि करने वाले हों वहां अल्लाह तआला के बन्दों के अधिकारों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने वाले और इन अधिकारों को अदा करने की कोशिश करने वाले हों।

परंतु मुझे यह कहते हुए अफसोस है कि यहां कुछ लोग जलसा में शामिल होने के लिए आते तो हैं परन्तु प्राप्त कुछ नहीं करते सिवाय इसके कि कुछ दोस्तों को मिल लिया कुछ व्यर्थ की बातें हो गईं। ऐसे लोग फिर समस्याएँ ही खड़ी करते हैं। कुछ नौजवानों और बच्चों के लिए ठोकर का कारण भी बनते हैं कुछ बड़ी घृणित हरकतें भी कर लेते हैं और समझते हैं कि हमें कोई नहीं देख रहा। हमेशा हमें याद रखना चाहिए कि खुदा तआला हमेशा और प्रत्येक समय देख रहा है।

अतः सब से पहली बात जो मैं आज कहना चाहता हूं यह है कि हर एक को यह बात अच्छी तरह याद कर लेनी चाहिए कि जलसा विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए एक रूहानी जलसा है जिसका आयोजन किस लिए किया जाता है ताकि हम तक्वा में बड़ें। और ख़ुदा तआला से अपना संबंध पैदा करें और इस में उन्नति करें। कुछ ग़ैर मेहमानों के सामने तो पर्दापोशी हो जाती है उनके सामने कुछ सावधानी भी हो जाती है और कुछ अल्लाह तआला भी पर्दापोशी फरमाता है कि कुछ एक की ग़लत बातों और हरकतों से जमाअत की बदनामी ना हो तो बहरहाल जैसा कि मैंने कहा आज पहली बात जिसकी तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जलसा का उद्देश्य क्या है हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया के तक्वा पैदा हो।

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने जलसा के उद्देश्य और लक्षण का वर्णन फरमाते हुए शामिल होने वालों के लिए फरमाया कि

"उन के अन्दर ख़ुदा तआला का भय पैदा हो और नेकी और तक्वा और ख़ुदा तआला से भय और परहेज़गारी और नर्म दिली और आपसी मुहब्बत और भाईचारा में दूसरों के लिए एक आदर्श बन जाए और विनय और विनम्रता और सच्चाई उनमें पैदा हो।"

(शहादतुल कुरआन रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 6 पृष्ठ 394)

फिर आप ने जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाया कि

" तक्वा धारण करो। तक्वा प्रत्येक चीज़ की जड़ है तक्वा के अर्थ हैं कि प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म गुनाह से बचना।" फरमाया "तक्वा उसको कहते हैं कि जिस मामले में बुराई की शंका भी हो उससे भी दूर रहे।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 321 प्रकाशन 1985 यू.के)उस से भी बचो।

अब प्रत्येक अपनी समीक्षा करे तो ख़ुद ही अपनी अपना समीक्षक हो जाएगा कि क्या इस परिभाषा के अनुसार हम बारीक से बारीक गुनाह से बचने की कोशिश करते हैं और जिस बात में बुराई की शंका भी हो उससे बचने की चेष्टा करते हैं। इस बात की फिर हर कोई अगर समीक्षा करे। इस बात पर अनुकरण करने वाला हो समीक्षा करने के बाद यह देखें कि क्या वास्तव में हम अनुकरण करने वाले हैं और उसके अनुसार अनुकरण करने वाले हो तो तब हमें समझना चाहिए कि हमने जलसा सालाना के उद्देश्य को पूरा कर दिया या पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं

वरना तक़रीरें सुनना और कुछ समय का जोश दिखाना और नारे लगाना कोई अर्थ नहीं रखता कुछ नारे लगा रहे होते हैं और उनके चेहरे की प्रतिक्रियाएं और हंसी से यह पता लग रहा होता है कि कोई दिली जोश नहीं है बल्कि केवल नारा केवल नारे के लिए लग रहा है पहले तो यह प्रतिक्रिया या हरकत छुप जाती थी परंतु अब कैमरे की आंख बिना पता लगाए बग़ैर किसी के ज्ञान में लाए उनकी अवस्थाओं के बारे में बता देती है और फिर यह स्थायी सुरक्षित हो जाती है पहले तो यह प्रोग्राम केवल एम टी ए पर ही होते थे अब सोशल मीडिया पर भी होते हैं वहां भी शक्ल नज़र आ जाती है नजर आ रहा होता है कि किसके चेहरे पर कैसा प्रभाव है।

फिर एक अन्य स्तर इंसान के अंदरूनी हालत और तकवा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फरमाया है आपने फरमाया कि "तक्वा का प्रभाव इसी दुनिया में मत्तकी पर आरंभ हो जाता है यह केवल उधार नहीं नकद है" फरमाया कि "जिस तरह ज़हर का प्रभाव और विष का प्रभाव शीघ्र शरीर पर हो जाता है " ज़हर कोई इन्सान पीले या कोई दवाई खा ले उसका प्रभाव इंसान पर प्रकट होना आरंभ हो जाता है बल्कि कई बार हो जाता है फरमाया कि" इसी तरह का तक्वा का प्रभाव भी होता है।" (मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 324 प्रकाशन 1985 ई यूके) तो यह आप ने स्तर वर्णन फरमाया अत: यह हो नहीं सकता कि कि इन्सान तक्वा पर चलने वाला हो और उसका प्रभाव ना हो रहा हो तक्वा पर चलने वाला कभी बुराई के क़रीब जा ही नहीं सकता। उसके विचार भी पवित्र होना शुरू हो जाते हैं। इस दृष्टि से हर कोई अपनी समीक्षा ख़ुद कर सकता है।

आप ने एक अवसर पर फरमाया "मैं ये सब बातें बार-बार इसलिए कहता हूं कि खुदा तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा है इस से यही उद्देश्य है कि वह वास्तविक अनुभूति जो दुनिया में गुम हो चुकी है...." अल्लाह तआला की अनुभूति नहीं रही दुनिया में गुम हो गई दुनिया की चीज़ों ने विजय प्राप्त कर ली अल्लाह तआला की तरफ ध्यान कम हो गया। नारा या वादा तो धर्म को दुनिया पर प्राथमिक रखने का है परंतु बहुत सारे ऐसे अवसर आ जाते हैं कि दुनिया प्राथमिक हो जाती है और धर्म पीछे चला जाता है। फरमाया "और वही वास्तविक तक्वा तथा पवित्रता जो इस ज़माने में पाई नहीं जाती। से दोबारा स्थापित करे। मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 277-278 1985 ई यू.के) उद्देश्य क्या है जमाअत का? कि वह तक्वा तथा पवित्रता जो इस दुनिया में पाई नहीं जाती। उसे दोबारा स्थापित करे। अत: जो अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार तक्वा तथा पवित्रता को स्थापित करने की कोशिश करेगा वही सफल होगा। वही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उद्देश्य को पूरा करने वाला है और वही जलसा के उद्देश्य को पूरा करने वाला है।

जिन दूसरी बातों की तरफ आज मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं उन पर अनुकरण भी इसी अवस्था में होगा और हो सकता है जब दिलों में खुदा का भय हो और तक्वा हो और जलसा पर आने के उद्देश्य को पूरा करने की इच्छा हो जैसा के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के उद्देश्य का वर्णन करते हुए फरमाया कि "प्रत्येक शामिल होने वाले में क्या विशेषताएं पैदा होनी चाहिए अर्थात खुदा तआला के अनुभूति प्राप्त करने के बाद उसमें नर्म दिल भी पैदा हो। एक दूसरे के लिए दिल नर्म हो आपस की मुहब्बत हो भाईचारा हो विनम्रता हो विनय हो और सच्चाई के उच्च स्तर स्थापित हों।

जलसा में शामिल होने वालों के दो वर्ग हैं। ये दो प्रकार के लोग होते हैं। यहां हमारे जलसा में शामिल होने वाले नहीं कहना चाहिए बल्कि जलसा का जो प्रबंध है एक इस के अधीन एक वर्ग है और एक वह लोग जो शामिल होने के लिए आ रहे हैं। बहरहाल ये दो प्रकार के लोग हैं और इन दोनों प्रकार के लोगों में यह विशेषताएं पैदा होनी आवश्यक हैं। ना ही वे इन बातों से बरी हो सकते हैं जो ड्यूटिया दे रहे हैं सेवा कर रहे हैं काम करने वाले हैं, न वे जो शामिल होने वाले हैं। दोनों को इन स्तरों पर अपने आप को परखना होगा जो मेज़बान हैं उनको भी और जो मेहमान हैं उनको भी। उन दोनों में तक्वा होगा तो ये विशेषताएं पैदा होंगी। अत: इस उद्धरण से दोनों को मैं उनकी ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों के बारे में कुछ ध्यान दिलाना चाहता हूं। अगर दोनों में ये विशेषताएं पैदा हो जाऐं तो जलसा का माहौल भी सुगम होगा और जलसा पर आने का उद्देश्य भी पूरा होगा। ड्यूटी देने वाले यह समझ सकते हैं कि हमने ड्यूटियां दीं हम काम करने वाले हैं तो हमने कोई बहुत बड़ा उद्देश्य हासिल कर लिया या अल्लाह तआला को राज़ी कर लिया। हां राजी कर लिया अल्लाह तआला को यदि इन बातों पर अनुकरण भी साथ-साथ किया ना ही शामिल होने वाले यह कह सकते हैं कि हम बड़ी दूर का सफर करके आए हैं तो हमने अल्लाह को राज़ी कर लिया। हां राज़ी इस अवस्था में कर लिया जब अल्लाह तआला की अनुभूति पैदा हो और जब बन्दों के अधिकारों की तरफ ध्यान हो।

सबसे पहले में काम करने वाली है मेज़बानों को ध्यान दिलाऊंगा कि अपने अंदर ये गुण विशेष रूप से पैदा करने की कोशिश करें। अपनी भावनाओं को कंट्रोल में रखें प्रत्येक अवस्था में मेहमान का ध्यान रखना है नर्म भाषा प्रयोग करनी है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया उहदेदारों को और काम करने वालों का सबसे अधिक कर्तव्य बनता है कि नर्म भाषा प्रयोग करें। उहदेदारों और काम करने वालों का सबसे पहला कर्तव्य बनता है कि विनम्रता दिखाएं। प्रत्येक अवस्था में मेहमान का ध्यान रखना है। उहदेदारों को भी, काम करने वालों को भी नर्म भाषा प्रयोग करनी है।

फिर काम करने वालों के आपस के संबंध है उन में भी मुहब्बत और श्रद्धा और भाईचारा होना चाहिए। मेहमानों के लिए भी और आपस के संबंध भी हैं। उहदेदार और अधीन काम करते हुए एक दूसरे की बात पर गुस्से में आ गए तो मेहमानों पर विशेष तौर पर दूसरे मेहमानों का जो यह सुनते हैं कि अहमदियों के जलसे में सब आपस में मुहब्बत और प्यार से रहते हैं और किसी प्रकार के ग़ुस्सा को प्रकट नहीं करते या नहीं होता जब इस प्रकार की बातों को देखेंगे फसादों को देखेंगे या कहीं भी दो आदमियों को ऊंचा बोलता हुआ देखेंगे तो उन पर ग़लत प्रभाव होगा। काम करने वालों को हमेशा याद रखना चाहिए कि जब अपने आप को कुछ दिन की सेवा के लिए प्रस्तुत कर दिया और सेवा भी वह जो बड़े उच्च स्तर की सेवा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमानों की सेवा है इसमें अपने व्यवहार भी फिर इस प्रकार रखें कि किसी मेहमान को कोई कष्ट न पहुंचे। न एक दूसरे को जो काम करने वाले हैं एक दूसरे से कष्ट पहुंचे। जलसा की तरबियत का यह हिस्सा है कि अफसरों ने भी और अधीन काम करने वालों ने भी अपनी भावनाओं को कंट्रोल में रखना है। पार्किंग है, ट्रैफिक कंट्रोल से लेकर खाना पकाने और सफाई करने वाले काम करने वालों तक इन सब को उच्च चरित्र को प्रकट करना चाहिए। अल्लाह तआला पवित्र कुरआन में फरमाता है قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا (अल बकरा 84) अर्थात लोगों से नर्मी से बात किया करो। यह बात अल्लाह तआला ने चरित्र के उच्च स्तर स्थापित करने के लिए बताई है। एक साधारण बात है। एक मोमिन से हर समय ही उच्च उच्चरण का प्रकटन होना चाहिए लेकिन इन विशेष अवस्थाओं में जब कि आपने अपने आप को सेवा के लिए प्रस्तुत किया है, वे मेहमान जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमान हैं वे मेहमान जो अपनी बौद्धिक और आचरण और आध्यात्मिक अवस्थाओं के बेहतर करने के लिए यहां आए हैं उनकी व्यावहारिक तरबीयत तो काम करने वाले अपने व्यवहार से ही कर सकते हैं और करेंगे अत: इस दृष्टि से आप लोग जो काम करने वाले हैं दोहरे सवाब के अधिकारी हैं एक तो जलसा की सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत करके और दूसरे अपने अच्छे आचरण से लोगों की तरबीयत करके दूसरों को भी एहसास दिला कर कि जलसा पर आने वाला उच्चारण को प्रकट करने वाला होना चाहिए यदि किसी ने ग़लत रंग में या ग़लत बात करने वाला और जब यह देखेगा कि काम करने वाले इसका उत्तर नर्मी से और अच्छे आचरण से दे रहे हैं तो ये व्यावहारिक नमूना अपने आप दूसरों को उसकी ग़लती का एहसास दिला कर व्यावहारिक तरबीयत करने वाला होगा। आं हजरत सल्लल्लाहो वसल्लम ने फरमाया कि तोल में अच्छे आचरण से अधिक वज़न रखने वाली कोई चीज़ नहीं है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब हदीस 4799) वज़न करो, तकड़ी में तो दोनों तो अच्छे आचरण जो हैं उनका वज़न सबसे अधिक होगा क्योंकि अच्छे आचरण ही हैं जो दुनिया के फसादों को समाप्त करने वाले हैं। अच्छे आचरण ही हैं जो फिर अल्लाह तआला के अधिकारों को अदा करने की तरफ ले जाते हैं बल्कि हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि कुछ अवस्थाओं में अल्लाह तआला के अधिकारों से बढ़कर बंदो के अधिकार हो जाते हैं(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 290 प्रकाशन 1985 ई यू. के) मानो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उच्च आचरण जो हैं उन के कारण से भावनाओं पर कन्ट्रोल होगा धैर्य का प्रकटन होगा और दूसरों की ग़लत बात भी नर्मी से जवाब देने का हौसला पैदा होगा। इन्सान के बहुत से दूसरे गुनाह हैं यही उच्च आचरण हैं फिर इन गुनाहों की माफी का माध्यम बना जाते हैं।

अत: पहली बात प्रत्येक काम करने वाले को अपने पल्ले बांध कर उस पर अनुकरण करने वाली जो है वह यही है कि उसके आचरण उच्च हों अत: देखें कि कि कितना सस्ता सौदा है अल्लाह तआला किस प्रकार उन लोगों को विशेष तौर

पर नवाज़ रहा है जो उसके लिए केवल अपनी जबान बंद रखते हैं और चेहरे पर मुस्कुराहट रखते हैं। यदि कोई कहे कि ड्यूटी के बोझ के कारण से अमुक व्यक्ति के गंदे व्यवहार की वजह से किसी आदमी ने बहुत ग़लत व्यवहार किया तो मुझे ग़ुस्सा आ गया तो हमें हमेशा अपने आका तथा मौला हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ देखना चाहिए जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया कि वह तुम्हारे लिए आदर्श हैं। कौन से कष्ट थे जो आप को नहीं पहुंचे। कौन सी परेशानी थी जो आपको नहीं हुई। या जिन के कारण आप के लिए पैदा नहीं किए गए थे। इंसान की सोच में जितनी भी कोई कठोर अवस्थाएं और परेशानियां और कष्ट हो सकती हैं इन सब से सबसे ज्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन परेशानियों और तकलीफों से गुज़रे हैं और सहन की हैं। परंतु इसके बावजूद सहाबा वर्णन करते हैं कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सब से अधिक किसी को मुस्कुराने वाला नहीं देखा। (सुनन तिर्मीज़ी हदीस 3641) हमने आप से अधिक किसी को मुस्कुराने वाला नहीं देखा। मुस्कुराहट हर समय आपके चेहरे पर होती थी। ये हैं नमूने हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का।

फिर आपने यह भी फरमाया यह बात फरमा कर हमें होशियार किया कि जो व्यक्ति नर्मी से वंचित किया गया वह भलाई से भी महरूम किया गया(सुनन अत्तिर्मज़ी हदसी 2013) अगर तुम्हारे अंदर नर्मी नहीं तो फिर नेकी से भी वंचित हो गए। यह काम करने वालों के लिए भी है लोगों के लिए भी है। बहुत सारे लोग आपस में एक दूसरे से उलझ पड़ते हैं फिर प्रत्येक भलाई से वंचित हो जाते हैं। अत: अल्लाह तआला आप को साल के बाद यह अवसर प्रदान कर रहा है और विशेष तौर पर काम करने वालों को अपने उच्च आचरण, अपनी नर्मी के स्तर, अपने चेहरों पर मुस्कुराहट के प्रकटन पहले से बढ़कर करने चाहिए।

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने जो मेहमानों से उच्च उच्चारण के बारे में जो हमें नसीहत फरमाई है इसे भी प्रत्येक काम करने वाले को हमेशा अपने सामने रखनी चाहिए। आप ने फरमाया कि

"मेहमान का दिल शीशे की तरह नाज़ुक होता है और ज़रा सी ठेस लगने से टूट जाता है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 406 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू. के)

फिर मेहमानों की सेवा करने वालों को हिदायत करते हुए आपने फरमाया कि "

देखो बहुत से मेहमान आए हुए हैं उनमें से कुछ को तुम पहचानते हो कुछ को नहीं। इसलिए उचित यह है कि सबको सम्माननीय जान का मेहमान नवाजी करो।"

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 226 प्रकाशित 1985 यू के)

अत: मेहमानों की मेहमान नवाज़ी में किसी प्रकार की विशेषता नहीं होनी चाहिए यह ना होकर जाने वालों के साथ बेहतर व्यवहार हो रहा है और जिन को नहीं जानते उनका उचित ध्यान रखा जा रहा है या उन से रूखे तरीके से मिल रहे हों।

इस बार यहां अफ्रीका से और बहुत से दूसरे देशों से भी काफी संख्या में मेहमान आए हैं पहले तो पूर्वी यूरोप के और यूरोप के इलाके से आते थे हर आने वाले को अच्छी और ख़ुश करने वाली यादें जलसा सालाना जर्मनी और यहां की मेहमान नवाज़ी करने वालों की ले कर जानी चाहिए। और यह आप लोगों का जो काम करने वाले हैं उनके व्यवहारों पर निर्भर है अत: इस दृष्टि से भी अपनी ज़िम्मेदारी को समझें और विशेष रूप से जो ग़ैर जमाअत के लोग आते हैं उनके लिए हर सेवा करने वाला भी तथा हर अहमदी भी जो इस जलसा में शामिल हो रहा है इस्लाम की सुंदर शिक्षा का व्यावहारिक नमूना दिखाकर तब्लीग़ का माध्यम बनता है। सुंदर शिक्षा दिखाने का माध्यम बनता है। इस लिहाज़ से आप सब शामिल होने वाले और ड्यूटी देने वाले भी एक ख़ामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं।

हर विभाग के काम करने वाले को याद रखना चाहिए कि उसका विभाग प्रमुख है जैसा मैंने कहा कि ट्रैफिक कंट्रोल का काम है या पार्किंग का विभाग है रजिस्ट्रेशन का स्कैनिंग का विभाग है या खाना पकाने का या खिलाने का विभाग है सफाई और सुथराई का विभाग है या डिस्पिलन रखने का विभाग है प्रत्येक विभाग एक ख़ामोश तब्लीग़ कर रहा होता है अत: अपनी ड्यूटियों के इस महत्तव को भी समझें। डिस्पलन भी इसलिए ज़रूरी नहीं होता कि चेहरे पर कठोरता को बनाऐं रखें तो तब ही प्रभाव होगा। औरतों में विशेष रूप से जलसा सालाना यू के में लड़कियां डिस्पलन स्थापित करती हैं और मुस्कुराते चेहरों के साथ स्थापित करती हैं किसी ने मुझे बताया कि अमुक बच्ची तो लजना में शामिल हो गई है वह भी हमें शर्मिंदा कर देती थी कि जब भी बात करने लगो या औरतें बैठकर आपस में एक दूसरे से बात करने लगें तो मुस्कुराते चेहरे के साथ खामोश रहने का कार्ड लेकर आगे कर दें। मुंह से कुछ नहीं बोलना। अगर तो सुलझे हुए लोग हैं निस्संदेह ड्यूटी वालों के ध्यान दिलाने से खामोश हो जाएंगे और यदि जाहिल बुरे आचरण वाले हैं तो ख़ामोश नहीं होंगे या फिर इस प्रकार के बुरे आचरण वाले भी होते हैं जो यह कह कर ड्यूटी वालों का मुंह बन्द करा देते हैं कि हमें पता है अब ख़ामोश होना है। फिर इस प्रकार के लोगों का विशेष रूप से औरतों को जवान लड़कियों को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है अपनी इन्चार्ज को कह दें वह ख़ुद उनको समझा देंगी लेकिन लड़कियों का काम नहीं कि वह बड़ी उम्र की औरतों से उलझें चाहे वह किसी भी जगह हों।

इसी तरह पर विशेष रूप से खाने की जगह पर विशेष ध्यान रखें अगर कोई असमय भी आ जाता है और उसकी मजबूरी है बीमार है या बच्चा रो रहा है उसको ज़रूरत है तो जिस सीमा तक उनकी सहायता हो सकती है वह करनी है अगर नहीं कर सकती तो खामोशी से अच्छे आचरण से और ख़ुशी से उत्तर दें अगर कोई कठोर शब्दों का प्रयोग भी कर देता है तो खामोश हो जाऐं।

इसी तरह मर्द और औरतों के ग़ुस्ल ख़ानों में जा सफाई का प्रबन्ध है वहां भी ध्यान रखना चाहिए।

इन बातों की तरफ मैंने कल काम करने वालों को हिदायत देते हुए भी ध्यान दिलाया था ड्यूटी उत्तम रूप में और इस स्तर के अनुसार करनी चाहिए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम हम से चाहते हैं। यह आवश्यक है कि विनम्रता तथा विनय पैदा हो दिल में दूसरें के लिए मुहब्बत पैदा हो इस की भावनाएं हों और यदि यह होगा तो आप की ड्यूटियां भी अल्लाह तआला के लिए होंगी।

इस तरह आने वाले मेहमानों को भी याद रखना चाहिए शुरू में भी मैं उनको कह चुका हूं कि आपके आने का उद्देश्य होना चाहिए अल्लाह तआला से संबंध पैदा करना है और उसके उच्च स्तर प्राप्त करने हैं पर इसके बंदों के अधिकार अदा करने की तरफ ध्यान देना है आने वाले मेहमानों को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जलसा में इसलिए शामिल हो रहे हैं जैसा कि मैं वर्णन कर आया हूं कि जलसा के दिनों में तक्वा पैदा करना है। अपनी व्यावहारिक और आध्यात्मिक अवस्था को बेहतर करना है। अत: यदि यह उद्देश्य सामने होगा तो किसी प्रकार की रंजिश शिकायत दूसरों से और विशेष तौर पर काम करने वालों से पैदा नहीं होगी। ड्यूटी देने वाले बहुत से ऐसे हैं नौजवान हैं जो स्कूलों में पढ़ रहे हैं, कॉलेज यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो अच्छे विभागों में काम करने वाले हैं कुछ लोग ऐसे हैं ये ड्यूटी सिर्फ इसलिए दे रहे हैं कि हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमान आ रहे हैं अत: आप जो शामिल होने वाले हैं उनको भी अपने आप को इस स्तर पर लाने की आवश्यकता है जो आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमान होने का योग्य बनाने वाले हों। केवल जलसा में शामिल होकर आप मेहमान नहीं बन जाते।

आगर आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की शिक्षा पर अमल नहीं कर रहे, आप की बातों पर अमल नहीं कर रहे, आपके जलसा के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर रहे तो आप हज़ार बार कहते रहें कि हम जलसा पर आए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मेहमान हैं, आप मेहमान नहीं हैं क्योंकि आप के व्यवहार साबित कर रहे हैं कि आप की वे हरकतें नहीं हैं।

अत: शामिल होने वाले भी अपने आप को इन बातों से अपने आप को बरी नहीं समझ सकते। आप को भी अपने व्यवहार को ठीक करने होंगे और यह काम करने वाले जो हैं यह इन से सहयोग करें।। बेशक यह लोग आप की सेवा पर निर्धारित हैं परन्तु आप की तरफ से भी अच्छे आचरण का प्रदर्शन होना चाहिए। उनसे सहयोग करें देश की सेवा पर आधारित है आपकी तरफ से भी अच्छे आते हैं। येयुवक जो एक सेवा की भावना के अधीन काम करने के लिए आते हैं इन से मेहमानों को भी अच्छा आचरण करना चाहिए। अच्छे आचरण का प्रकटन करना चाहिए। ताकि इन में सेवा की भावना और जोश जो है वह और अधिक उभरे और स्थापित रहे। यह नहीं कि महमानों के व्यवहार के कारण अगले वर्ष वो ड्यूटियों से भागना शुरु कर दें।

फिर जर्मनी के रहने वाले मेहमानों को यह भी याद रखना चाहिए कि वे एक अर्थ में मेहमान हैं और एक अर्थ में मज़बान हैं। जो जर्मनी से बाहर से आए, उन्हें उनके लिए त्याग करना चाहिए, क्योंकि वे जर्मनी में नहीं रहते हैं और बाहर से आकर जलसा में शामिल हो रहे हैं, वे अब मेहमान बन गए हैं और यहां के रहने वाले मेज़बान बन गए हैं। अत: उनके लिए आपको बलिदान करना चाहिए।

आपको बैठने के लिए काफी स्थान देना है खाना खाने के समय अगर स्थान की तंगी है या और कोई सहायता की आवश्यकता है तो आप सब का फर्ज़ है कि उन की सहायता करें। भाषा आदि की समस्या के कारण कई बार सहायता की ज़रूरत पड़ जाती है। यहां भी आवश्यकता हो सहायता करें। यह केवल ड्यूटि देने वालों का काम नहीं कि मदद करें। बल्कि यहां के रहने वाले प्रत्येक अहमदी का फर्ज़ है कि उन की सहायता करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेश के अनुसार आपस की मुहब्बत तथा भाई चारा का प्रकटन ज़रूरी है।

इसी प्रकार, प्रत्येक जमाअत के बाहर के जो मेहमान आए हुए हैं। उन को भी जैसा कि मैंने कहा कि हर अहमदी को अपना आदर्श दिखाना चाहिए। आप सब के नमूने देख कर ही ग़ैरों को इस्लामी परिवेश के सुन्दर नज़ारे नजर आएंगे। जहां हर अहमदी विनम्रता नर्मी आपस की मुहब्बत और भाईचारा का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा होगा वे नज़ारे लोगों को नज़र आऐंगे। अत: मर्दों और औरतों दोनों इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि भोजन के बारे में कहीं कोई कमी हो जाए। तो इसे सहन करना चाहिए। मूल आहार जिसके लिए आप यहां आए हैं वह आध्यात्मिक और ज्ञान वर्धक खाना है। तो इसे प्राप्त करने की कोशिश करें यह आवश्यक है। इसी प्रकार बाजारों में उसी समय जाएं जब उस का समय हो। मेरा विचार है कि प्राय अमूमी विभाग तरबियत जो हा वह बाज़ार तो खोलता ही उस समय है जब जलसा का सेशन न चल रहा हो। बल्कि कई बार लोग ज़ोर दे रहे होते हैं कि नहीं हमें भूख लग रही है हम ने जाना है। उनके प्रबंधन के लिए, जैसा कि मैं पहले भी मेहमान नवाज़ी विभाग को पहले भी कह चुका हूं कि इन का प्रबन्ध करना चाहिए। फिर महिलाओं का बाज़ार है इस में भी और पुरुषों के बाज़ार में भी जलसा की पवित्रता और परिवेश को बनाए रखें। यह नहीं कि केवल जलसागाह में बैठ कर जलसा का सम्मान कर लिया। इस सारे परिसर में आ गए इस इलाके में आ गए जहां टेंट लगे हुए हैं कैम्प लगे हुए है या हाल हैं ये सब जलसा की जगह है यहां भी आप लोगों को जलसा के सम्मान को स्थापित करना चाहिए। قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا का जो कुरआन का आदेश है जो मैंने पहले बताया है यह केवल काम करने वालों के लिए नहीं है बल्कि प्रत्येक मुसलमान के लिए है और विशेष रूप से प्रत्येक अहमदी को इस बात को ध्यान रखना चाहिए।

मैंने कार्यकर्ताओं तो कहा है कि अच्छे आचरण का प्रदर्शन करें और किसी प्रकार का बुरा आचरण न दिखाएँ। कल भी कहा और आज भी कहा लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि उनके धैर्य की आप लोग परीक्षा करते रहें और ऐसे हालात पैदा करें जो शर्मिंदगी की स्थिति पैदा करती हैं? जहां जहां जिस विभाग के काम करने वाले हैं आप से किसी बात के बारे में पूछे या हिदायत करें उच्च आचरण को प्रकट करते हुए इस बात को स्वीकार करें और सहयोग करें। अत: कुरआन के आदेश के अनुसार अच्छे आचरण से पेश आएं प्रत्येक शामिल होने वाले के लिए यह कुरआन का आदेश है।

जलसा के समय में जब यह प्रोग्राम हो रहे हों। तो सिवाए इस के कि किसी विवशता से उठ कर जाना पड़े जलसा की कारवाई को सुनें। प्रत्येक तकरीर में प्रत्येक अहमदी के लिए कोई न कोई इस प्रकार की बात होती है जो उस के ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के काम आ सकती है।

इसी तरह जलसा के दौरान भी और चलते फिरते भी इन दिनों में ज़िक्रे इलाही और इस्तिग़फार करते रहें कि यह दुआएं और ज़िक्रे इलाही और दरूद प्रत्येक की व्यक्तिगत स्थितियों में सुधार का भी माध्यम है और जमाअत की स्थिति में सुधार का भी माध्यम है और उम्मते मुस्लिम जिस समय से गुज़र रही है उस के लिए भी बेहतर हालात के लिए दुआ करें।

इस समय दुनिया में सबसे दुरूद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पढ़ा जाता है। केवल नमाज़ में ही शायद करोड़ों मुसलमान दरूद पढ़ते हैं लेकिन हम देखते हैं कि ज्यादातर अवस्था धार्मिक लिहाज़ से भी और आध्यात्मिक आधार भी मुसलमान बदतर हैं। क्योंकि ये दरूद केवल रस्म के तौर पर पढ़े जाते हैं। नमाज़ें वे नमाज़ें हैं जो हलाकत का कारण हैं और अल्लाह तआला के उपदेश के अनुसार इस प्रकार की नमाज़ों को फिर अल्लाह तआला के मुंह पर मारता है अत: इस अवस्था में ख़ालिस होकर वफा के साथ और अपनी हालतों में तब्दीलियां पैदा करते हुए अपने दिल में ख़ुदा तआला की तक्वा पैदा करते हुए अहमदियों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आती है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद तथा सलाम भेजें और इस्लाम की तरक्की के लिए दुआ करें। इन देशों में आकर केवल अपनी सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने वाला न बन जाएं, बल्कि अपने भीतर एक शुद्ध परिवर्तन पैदा करने की कोशिश करें। दरूद के अलावा अपनी ज़बानों से ज़िक्रे इलाही हमेशा करते रहें। अल्लाह तआला से दुआं करें कि अल्लाह तआला हमें इस जलसा के उद्देश्य को पूरा करनेवाला और उस की बरकतों से हमें हिस्सा लेने वाला बनाए। यह सफर जो कि नेक उद्देश्य के लिए है, इस का लाभ हमें हमेशा पहुंचता रहे, और हमारी नस्लों में भी तक्वा पैदा हो। और हर वह बात जो अल्लाह तआला के नापसन्द है इस से हम बचने वाले हों। और हमारी औलादें और नस्लें भी इस से बचने वाली हों। हमारी संपत्ति में बरकत हो और हम या हमारी नस्लें इस प्रकार के माल कमाने का माध्यम न अपनाएं जो अल्लाह तआला की नज़र में ना पसन्द न हो। फिर हराम माल में आता हो। औरतें अपने बच्चों और पतियों के लिए दुआ करें। कि अल्लाह तआला हमेशा उन्हें धर्म पर स्थापित रखे। अल्लाह तआला हमेशा इस प्रकार की परीक्षा से बचा कर रखे जिस से धर्म नष्ट होने का ख़तरा हो। हमेशा सीधे रास्ते में चलें। ज़िक्रे इलाही और चलते फिरते दुआओं के साथ इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि इन दिनों में विशेष रूप से और आमतौर से और बाद में भी जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की पाबन्दी हो और विशेष रूप से यहाँ रहने वाले सुबह की नमाज़ में ज़रूर शामिल हों बल्कि यहाँ तहज्जुद का भी प्रबन्ध होता है इस के लिए भी ज़रूर जागें और शामिल हों इसी तरह का? करने वाले अगर ड्यूटी के बाद शीघ्र जमाअत के समाथ नमाज़ का प्रबन्ध करें यासमय इस प्रकार रखें कि अपने अपने स्थान पर ड्यूटी से पहले नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ लें।

अल्लाह तआला प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार जीने की तौफीक प्रदान करे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत में शामिल होने की रूह को समझते हुए इस का हक अदा करने की तौफीक प्रदान करे। यह रूह क्या है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के शब्दों में ही वर्णन करता हूं।

" जब तक हमारी जमाअत तक्वा धारण न करे नजात नहीं पा सकती। ख़ुदा तआला अपनी हिफाज़त में न लेगा।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 458 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर आप फरमाते हैं" घरों को अल्लाह के ज़िक्र से भर दो। सदका दो। गुनाहों से बचो। ताकि अल्लाह तआला रहम करे।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 458 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अल्लाह करे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की इच्छा के अनुसार अपने जीवन गुज़ारने वाले हों। जलसा की बरकतों से बरकत प्राप्त करने वाले हो। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की दुआएं जो आप ने जलास में शामिल होने वालों के लिए की हैं उन से हिस्सा पाने वाले हों और इन दिनों में भी हिस्सा पाने वाले हों और बाद में भी हम इन के वारिस बनते रहें । अल्लाह तआला हमें हमेशा नेकियों की तौफीक प्रदान करता रहे।

एक प्रशासनिक बात जो मैंने पहले नहीं की थी, अब मैं कहना चाहता हूं कि सुरक्षा के मामले में हर किसी को हमेशा अपने दाए बाए नज़र रखनी चाहिए। शामिल होने वालों को भी और ड्यूटी वालों को भी। जो लोग भी इस काम के लिए निर्धारित हैं उन के साथ सम्पूर्ण रूप से सहयोग करें। अगर कोई चीज़ देखें तो शीघ्र इस की सूचना दें। अल्लाह तआला प्रत्येक शामिल होने वाले को अपनी सुरक्षा में रखे और किसी प्रकार की कोई एसी घटना न हो तो किसी प्रकार की नुकसान पहुंचाने वाली हो।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

मुद्दे पर बातें करना और फिर धर्म से इस का समाधान करना एक दुर्लभ बात है, और आज उन्होंने यही किया।

महोदया ने कहा: आज लोग इस्लाम से डरते हैं। लेकिन ख़लीफा ने हमें मस्जिद की वास्तविकता के बारे में बताया इसलिए अब स्वीडन में यह सम्बोधन घर घर तक पहुंचना चाहिए और सभी के हाथों में थमाना चाहिए।

एक स्वीडश मेहमान श्रीमती कोरिन्ना Friell साहिबा, जो एक ईसाई पादरी हैं ने भी अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे आप के ख़लीफा के भाषण के हर शब्द से सहमति है। विशेष रूप से मुझे यह बात पसंद आई कि हमें ख़ुदा तआला को याद रखना चाहिए उसकी इबादत करनी चाहिए और यही धर्म का आधार है। और इसी प्रकार उन्होंने जब शुरुआत में कुरआन करीम पढ़ा, तो मुझे लगा वह बहुत आध्यात्मिक और हिला देने वाला लगा। आपके ख़लीफा कई मुद्दों पर बात करते हैं, जैसे कि दुनिया की शांति, धर्मों का डर, लेकिन वे साथ ही समाधान भी सुझाते हैं।

* एक स्वीडिश मेहमान श्री लार्स ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे लगता है कि मैं आज किसी अन्य दुनिया में हूं। बहुत ही प्रभावकारी आयोजन था। आपके ख़लीफा दूसरों का ध्यान रखने वाले और बहुत गर्मजोशी से व्यवहार करने वाला इन्सान हैं। उनके भाषण का मुख्य विषय यही था कि एक-दूसरे का ख्याल रखें, खासतौर उन का जो सब से कमज़ोर और जरूरतमंद हैं।

ख़लीफा एक शांतिपूर्ण इंसान है और वह कुरआन के माध्यम से साबित हुआ कि धर्म दिल का विषय है। उन्होंने निश्चित रूप से मुझे विश्वास दिलाया और मुझे उम्मीद है कि यहां मौजूद अन्य लोग लाभान्वित होंगे।

महोदय ने कहा: मैंने इसे आज से पहले आप के ख़लीफा के बारे में समाचार पत्रों में पढ़ा था, लेकिन आज उन से मिलने का बाद पोप की तरह ही लगे हैं और मैं उनका उसी प्रकार सम्मान करता हूं।

* एक मेहमान श्री माइकल वेस्टरबर्ग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफतुल मसीह ने अपने आज के सम्बोधन में कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों के बारे में बात की। लोग कहते हैं कि इस्लाम चरमपंथ का धर्म है, लेकिन आपके ख़लीफा का संदेश इससे काफी अलग था। उन्होंने कहा कि हमें एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए। मैं उन के हर शब्द से सहमत हूं और अब मुझे इस्लाम का डर नहीं है। मुझे अच्छा लगा जिस प्रकार उन्होंने अपने पड़ोसियों के अधिकारों का ज़िक्र किया और यह कि अहमदी मुसलमान स्थानीय लोगों की सेवा करेंगे और जहां आवश्यक हो वहां उनकी मदद करेंगे।

महोदय ने कहा: मीडिया केवल नकारात्मक पहलुओं को देखता है और सकारात्मक बात पर कभी नहीं करता। मैं केवल यही चाहता हूं कि वे इन्साफ से काम लें और उनके सम्बोधन का पूरा अंश प्रकाशित कर दें।

* एक स्वीडिश मेहमान एनडरस ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं: आज मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है। यह एक बड़ी अच्छी बात थी कि जिस प्रकार मीडिया हमें इस्लाम के बारे में बताता है कि यह एक कट्टर धर्म है। लेकिन आज हमें इस के विपरीत सुनने को मिला। ख़लीफा ने हमें तसल्ली दिलाई और हमारे डर को दूसर किया और साबित किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) शांति प्रिय थे।

माल्मो में लोग विशेष रूप से मस्जिदों से डरते हैं क्योंकि वे अरब चरमपंथियों से भरी हुई हैं। लेकिन ख़लीफा ने हमें दिखाया कि ऐसे लोगों का मार्ग इस्लाम का मार्ग नहीं है। मैं कहता हूं कि आपको विज्ञापन देना चाहिए कि आपकी मस्जिद को सऊदी अरब से धन नहीं मिलते और ख़लीफा के संदेश को आगे फैलाना चाहिए कि इस मस्जिद में हर किसी को आने की इजाज़त है और इस्लाम एक सहिष्णुता और खुलेपन का धर्म है और हर किसी के लिए खुलेपन का धर्म है। उनका संदेश यह था कि जिहाद बन्द हथियारों और हथियारों से नहीं लेकिन जीभ और कलम के साथ करते हैं।

* एक मेहमान एनेट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यहां आने से पहले मैं इस्लाम से डरता था, लेकिन आज जो मुझे नज़र आया है और जो मैंने मुस्लिम पोप से सुना, यह काफी अलग था। उनका संदेश दया, सहानुभूति और शांति का संदेश था।

ख़लीफा यह शिक्षा देते हैं कि आपको प्रत्येक आदमी से मुहब्बत करना चाहिए, उन के धर्म की परवाह किए बिना। इसी प्रकार यह भी सुन कर अच्छा लगा कि इस्लाम अपने पड़ोसियों के अधिकारों के बारे में शिक्षा देता है।

* बुद्ध धर्म से सम्बन्ध रखने वाले एस मेहमान शचुलज़ शल्ट्ज ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, आपके ख़लीफा ने जो, शांति और सहिष्णुता का संदेश दिया, उसे सुनकर आश्चर्यचकित हुआ। वह आदरणीय और बुद्धिमान थे। वह बहुत खुले तौर पर बात कर रहे हैं और उन्होंने बहुत मुश्किल विषयों के बारे में बात की, लेकिन उन्होंने सच के साथ बात की। उदाहरण के लिए, उन्होंने स्वीकार किया कि कुछ मुस्लिम चरमपंथी हैं, लेकिन मेरी राय में सभी मुसलमान इसे सुनना पसंद नहीं करते हैं, बल्कि वे दिखावा करते हैं कि सब कुछ ठीक है। वह प्रत्येक इन्साफ से बात सुनने वाले का डर दूर करने में सफल रहे। उनका धर्म मेरे धर्म के बहुत समान ही है।

महोदय ने कहा: आजकल जन्मजात बच्चों को सब से अधिक दिया जाने वाला नाम अली और मुहम्मद हैं, इसलिए स्थानीय लोग डरते हैं कि मुस्लिम वापस आ रहे हैं। लेकिन आपके ख़लीफा ने कुरआन का जिक्र करते हुए कहा कि इस्लाम लोगों को अधिकार प्रदान करता है, ने कि अधिकार छीन लेता है। आपकी जमाअत में अतिवाद की अनुपस्थिति ही इस बात की गवाह है कि आप एक सच्चे मुसलमान हैं, भले ही लोग कुछ भी कहें। ख़लीफा ने कहा कि इस्लाम से नफरत करने के लिए कोई जगह नहीं है और हमें साथ मिलकर अच्छाई के लिए कोशिश करनी चाहिए। मैं अपने जीवन में बुद्धा से प्रभावित हुआ हूं लेकिन आज एक इस्लामी नेता से भी प्रभावित हुआ हूं

एक स्वीडिश मेहमान महिला मिस मीनका साहिबा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि, "मैंने आज यह सीखा कि इस्लाम एक हिंसक धर्म नहीं बल्कि सहिष्णुता और शांति का धर्म है। मैं केवल इतना ही कहूंगी कि जो कुछ आप के खलीफा कह रहे हैं अगर वही इस्लाम है तो इस्लाम से डरना की कई ज़रूरत नहीं और इस्लाम एक महान धर्म है।

* एक मेहमान क्रिस्टोफर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: आज का दिन मेरे लिए बहुत फायदेमंद साबित हुआ। मुझे लगता है कि यह सच्चा इस्लाम है जो कि आपके ख़लीफा ने अपने भाषण में वर्णित किया था। मैंने आज यह भी सीखा कि कुरआन शांति की किताब है और आपके ख़लीफा वास्तव में एक महान इंसान हैं। उनसे मिलने और उनके विचार को सुनकर कि शांति और न्याय सभी के लिए समान होना चाहिए, मेरे लिए सम्मान और धैर्य कारण था। मुझे उन से मिल कर एक अजीब संतुष्टि महसूस हुई। मैं यह दिन आने वाले कई सालों तक याद रखूंगा, क्योंकि जिस तरह आज मेरे दिल पर प्रभाव हुआ उसका वर्णन नहीं कर सकता।

* एक मेहमान दोस्त बोजर्न साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: समय के ख़लीफा को सुनना मेरे लिए सम्मानकाकारण है। उनके शब्द ज्ञान पर आधारित थे और न केवल मुस्लिमों के लिए बल्कि सभी मानवता के लिए थे। मुझे विशेष रूप से पसंद आया कि उन्होंने कहा कि मनुष्यों को अपने अधिकार प्राप्त करने से पहले मानवता का लाभ सोचना चाहिए और यह शांति का स्रोत है। उन्होंने कहा: उनके शब्द साहसी थे और न सिर्फ साहसी नहीं थे, बल्कि सच्चे भी थे।

एक ग़ैर-अहमदी मेहमान मित्र अब्दुल मजीद साहिब भी इस कार्यक्रम में शामिल थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मैं बहुत आभारी हूं कि मुझे आज यहां आने का अवसर मिला। मैं आपके ख़लीफा को एक असली नेता मानता हूं क्योंकि वे सच बोलते हैं और बहुत साफ और अच्छी बात करते हैं। उन्होंने इस्लाम को एक महान रंग में बचाया। उनका संदेश हर जगह फैल जाना चाहिए, क्योंकि स्वीडन में हर दिन कुरआन और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमले होते हैं और लोग इस्लाम से डरते हैं।

* संसद सदस्य हिलेव लार्सन ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। अपने विचार व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा: आप के ख़लीफा ने बहुत स्पष्टता के इस्लाम के बारे में श्रुताओं को बताया। उन्होंने समझाया कि इस्लाम शांति, सहिष्णुता और प्रेम का धर्म है। आपके ख़लीफा को हर मंच पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और हर मंच पर लोगों को उनकी बात सुननी चाहिए। अगर किसी को इस्लाम से कोई डर था, तो वह आज दूर हो गया होगा। मुझे विशेष रूप से आपकी मानवता के लिए चीजों को करने में प्रसन्नता है। जिस तरह स्कूल और अस्पताल को आप बनाने के लिए काम कर रहे हैं वह अद्भुत है, और मुझे आपके ख़लीफा की यह बात पसंद आई कि हम यहां पानी की लागत नहीं जानते हैं, यह बिल्कुल सच है।

*एक मेहमान Mr Jonas Otterbeck ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह भाषण Austria लोगों को देनी चाहिए क्योंकि इस देश में लोग इस्लाम नफरत और इस्लाम के डर से जुनूनी हो चुके हैं। उन्हें इस भाषण को सुनने की ज़रूरत है ताकि वे सीख सकें कि इस्लाम शांति का धर्म है।

ख़लीफा ने बहुत सुन्दरता से मस्जिदों के प्रयोजनों के बारे में समझाया और

मस्जिद का मतलब शांति है और सलात का अर्थ शांति और अमंन है।

मुझे यह भी पसंद आया कि आपके ख़लीफा ने कहा था कि जमाअत अहमिदया राजनीति से कोई संबंध नहीं रखती है और केवल शांति स्थापित करने के बारे में सोचती है। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि जब ख़लीफा ने कहा कि अहमदी मानवता की पीड़ा को दूर करना चाहते हैं और उनकी मदद करना चाहते हीं। फिर यह भी बहुत दिलचस्प था कि ख़लीफा ने बताया कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में एक मस्जिद ज़रार का गिरा दिया गया था जिस से साबित होता है कि मस्जिद केवल शांतिपूर्ण जगह होती हैं।

मैंने ख़लीफा का एक वाक्य नोट कर लिया है जो मुझे बहुत अच्छा लगा कि True Mosque transmit only love and peace मुझे लगता है कि इस भाषण के विषय भी यही रखा जा सकता है क्योंकि यह उन के भाषण सारांश था।

परिवार की मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों की मुलाकातें शुरू हुई। आज इस सत्र में, 24 परिवार के 76 सदस्यों को मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुए। ये परिवार स्वीडन की दो जमाअतों गोथ बर्ग और लावरोव से थे। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ चित्र बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने करूणा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम नौ तक जारी रहा। बाद में साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ मग़रिब और इशा जमाकर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

15 मई 2016 ई (बुधवार)

सुबह चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद तशरीफ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दफतर की रिपोर्टें देखीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के माल्मो में प्रवास के दौरान लंदन केंद्र और अन्य विभिन्न देशों से डाक, ख़त और रिपोर्ट नियमित प्राप्त हो रही हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ डाक देखते रहे। और हिदायतें देते रहे।

पारिवारिक तथा व्यक्तिगत मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों से मुलाकातें शुरू हुई। आज सुबह इस सत्र में 15 परिवारों और 9 दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की सआदत हासिल की। इस तरह, कम से कम 73 लोगों को मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने करूणा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए। प्रत्येक परिवार और अन्य लोगों ने व्यक्तिगत रूप से भी प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरें बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात करने वाली ये लोग माल्मो के स्थानीय लोगों के अतिरिक्त गोथनबर्ग, लोलियो और कालमार से आए थे। गोथनबर्ग और कालमार से आने वाले परिवार 285 कि.मी और लोलियो से 1510 कि.मी की दूरी तय कर के आए थे। मुलाकातों का यह प्रोग्राम एक घंटे तक जारी रही।

बाद में आदरणीय मुहम्मद ज़कारिया खान अमीर मुबल्लिग़ इन्चार्ज डेनमार्क, आदरणीय मामूनुनर्रशीद साहिब अमीर जमाअत स्वीडन और आदरणीय अताउल कुद्दूस साहिब वकील यू.एस.ए ने अलग अलग दफतरी मुलाकातें कीं। हुज़ूर अनवर ने विभिन्न मामलों के संदर्भ में निर्देश दिए।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के बाद अपने निवास स्थान पर पधारे।

पिछले पहले भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला दफतर के कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हो। आज शाम इस सत्र में 33 परिवारों के 120 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

माल्मो के स्थानीय समुदाय के अलावा, नॉर्वे, डेनमार्क, नीदरलैंड और अमेरिका से आने वाले लोगों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले सभी लोगों ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा पाने वाले बच्चों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को करूणा करते हुए चॉकलेट प्रदान किए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के माल्मो में प्रवास के दौरान पड़ोसी देश डेनमार्क और नॉर्वे से आने वाले जमाअत के दोस्तों की एक बड़ी संख्या माल्मो में ही स्थित है। ये लोग अपने प्यारे आक़ा से मिलने की सआदत भी पा रहे हैं। हुज़ूर अनवर का अनुसरण में नमाज़ें अदा करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और सुबह शाम इस आध्यात्मिक और मुबारक परिवेश से लाभान्वित हो रहे हैं। बार बार अपने प्यारे आका के दर्शन के क्षण भी पा रहे हैं। अल्लाह तआला ये बरकतें सब के लिए मुबारक करे।

आज मुलाकात करने वालों में ट्यूनीशिया से सम्बन्ध रखने वाले रज़ा हानी साहिब और उनकी पत्नी ने भाग लिया था। रज़ा हानी ने एम.टी.ए पर कार्यक्रम देखने के बाद जमाअत से संपर्क करके बैअत की। बैअत से पहले, उनकी मंगनी अपने मामो की बेटी के साथ हो चुकी थी।

स्वीडन में बैअत करने के बाद जब यह अपने वतन अपने रिश्तेदारों से मिलने गए तो वापस आकर उन्होंने मुबल्लिग़ इन्चार्ज स्वीडन को बताया कि मेरे एक छोटे मामो इमाम मस्जिद हैं और वह जमाअत के धुर विरोधी भी हैं। उन्हें जब पता चला कि मैंने अहमदियत स्वीकार कर ली है तो वह बहुत नाराज़ हुए और उन्होंने पूरे परिवार को कहा कि यह काफिर हो गया है और मेरी जो ममेरी बहन के साथ सगाई हुई थी उसके रिश्ते भी सब परिवार ने मिलकर इनकार दिया।

अधिकांश परिवार के सदस्य एक साथ इकट्ठे होते और विभिन्न अवसरों पर मैं तब्लीग़ किया करता था। उन्होंने अहमदियत का संदेश पहुंचाता। जमाअत के विश्वासों से संबंधित सवाल तथा जनाब होते इन को रज़ा हानी साहिब की मंगेतर भी लगातार सुनती रहीं और छोटे मामो जो इमाम मस्जिद हैं उनकी विरोध के बावजूद उनकी मंगेतर ने अपने माता-पिता से कहा कि मैं इतने दिनों से सभी शब्दों को सुना है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि अहमदियत असली इस्लाम है। अब मेरे पास उनके साथ शादी करने में कोई शंका नहीं है। इसलिए आप लोग विरोध न करें और रिश्ता निर्धारित कर दें। इस पर उसके माता-पिता ने उसकी शादी कर ली।

आज यह दोनों पति पत्नी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के लिए आए थे। उनकी मुलाकात के बाद, उनकी ख़ुशी का अंत नहीं था। आंखें आँसुओं से भरी हुई थीं। वह अपनी इस ख़ुशी पर बहुत हैरान थे कि पहली बार उन्हें ख़लीफतुल मसीह से मिलने का मौका मिला था। उनसे बात करनी मुश्किल हो रही था। अल्लाह तआला उन्हें ईमान तथा विश्वास में बढ़ाए। मुलाकातों का यह कार्यक्रम नौ तक जारी रहा।

अमीन का समारोह

बाद में साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद महमूद तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 19 बच्चियों और बच्चों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय आयशा खलोद अहमद, आफिया अहमद, दुर्रे अदन, शहला अहमद, अतिया रशीद, हुमा इकबाल, सोबिया अहमद बरीरह अहमद अलनीरह अहमद, सतवत अहमद, अली शाह खान।

प्रिय अमान अहमद खान, हमज़ा अहमद खान, मुतह्हर अहमद खान, फारान रशीद, वलीद अहमद, बिलाल अहमद, फरीद नियाज़ी, फैज़ान ताहिर।

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मग़रिब तथा इशा की नमाज़ अदा की नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

16 मई 2016 (सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजे

मस्जिद महमूद में पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय क्षेत्र में गए।

सुबह, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने डाक, रिपोर्ट और ख़तों को देखा और निर्देश दिए।

माल्मो से स्टॉकहोम तक प्रस्थान:

कार्यक्रम के मुताबिक, मालमो से स्टॉकहोम में प्रस्थान था। बारह बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए। माल्मो जमाअत के दोस्त औरतें, बच्चे बूढ़े बच्चे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ को अल्विदा कहने के लिए सुबह से ही मस्जिद के सेहन में जमा हुए थे। और बच्चियों के ग्रुपस लगातार अलविदाई नज़्में पढ़ रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल ने अपनी हाथ ऊंचा कर के सब को अस्सलामों अलैकुम कहे और सामूहिक दुआ करवाई। इसके बाद, स्टॉकहोम के लिए प्रस्थान किया।

माल्मो से स्टॉकहोम दूरी 615 किलोमीटर है। पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रास्ते में Ljungby शहर में रुक कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर अदा करना तथा लंच कार्यक्रम था। 182 किलोमीटर का सफर तय करता के बाद दो बजे के करीब Ljungby पहुंचे जहां Best Western Hotel में नमाज़ों के अदा करने और दोपहर के भोजन का इंतजाम किया गया था। नमाज़ों के लिए एक हॉल प्राप्त किया गया था। दो बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई।

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार यहां से 3 बज कर 20 मिनट पर आगे स्टॉकहोम के लिए रवानगी हुई। यहां से स्टाकहोम 433 किमी दूर है। रास्ते में एक स्थान पर लगभग पंद्रह मिनट के लिए रुके और फिर यात्रा जारी रही।

स्टॉकहोम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का निवास और सारे कार्यक्रमों का प्रबंधन Sheraton होटल में किया गया था। आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की Sheraton होटल तशरीफ़ आवरी हुई। होटल के आउटडोर लाउंज में, स्टाकहोम की जमाअत के लोग दर्शन करने के लिए आए थे। और बच्चों ने अपने प्रिय आक़ा का स्वागत किया। लड़कियां एक स्वागत गीत पेश कर रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ जैसे ही गाड़ी से बाहर पधारे तो सदर जमाअत ख़ालदि महमूद चीमा साहिब और मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीया काशिफ महमूद विर्क साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का स्वागत किया और मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। औरतों ने अपने प्यारे आक़ा के दर्शन किए। और मर्द दोस्त अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का स्वागत कर रहे थे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला होटल में प्रवेश कर गए। होटल के मुख्य द्वार पर होटल के चीफ सुरक्षा अधिकारी और ऑन ड्यूटी मैनेजर ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर की सेवा में फूल पेश किए। उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास अपार्टमेंट में प्रवेश किया।

नमाज़ मग़रिब तथा इशा होटल के हॉल में अदा की गई। साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर पधारे।

स्टॉकहोम स्वीडन की राजधानी है। जमाअत का गठन 1970 ई के दशक में हुआ था। वर्ष 2008 में, जमाअत ने एक इमारत जमाअत के सेन्टर के रूप में ब्रैमटेन, स्पंगा में 3.5 मिलियन करोंज़ में ख़रीदी। इस इमारत में पुरुषों और महिलाओं के लिए दो अलग हॉल हैं, जहां एक सौ नमाज़ी नमाज़ अदा कर सकते हैं। इसके अलावा पुस्तकालय, केंद्रीय कार्यालय, मेहमानों के कमरे, रसोई और अन्य बुनियादी सुविधाएं भी हैं।

जमाअत अहमदिया स्टॉकहोम की तजनीद लगभग 150 है। अल्लाह तआला की कृपा में, जमाअत एक स्टॉकहोम तरक्की कर रही है और अब नियमित रूप से अपनी मस्जिद बनाने का प्रोग्राम है।

17 मई 2016 (मंगलवार)

नमाज़ों को अदा करने करे लिए एक हाल शेरेटेन होटल में लिया गया था। सुबह तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ फजर पढ़ाई। स्टॉकहोम में सूर्योदय का समय चार बजकर दस मिनट है। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय अपार्टमेंट में पधारे।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने दफतरी डाक, ख़त और रिपोर्ट देखीं और निर्देश दिए।

पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार पारिवारिक मुलाकातें ग्यारह बजे शुरु हुईं। आज, स्टॉकहोम हाउस की 32 फैमलीज़ 109 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक फैमली ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य मिला। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने करुणा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चों तथा बच्चियों को चाकलेट प्रदान कीं।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम दोपहर डेढ़ बजे तक जारी रहा। इस के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय अपार्टमेंट में पधारे ।

आज जमाअत स्वीडन ने शेरटन होटल में एक स्वागत समारोह की मेज़बानी का आयोजन किया था।

शेरेटन होटल में स्वागत समारोह से पहले कुछ मेहमानान की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार समारोह की शुरुआत से पहले कुछ मेहमान सज्जनों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का कार्यक्रम था। उन मेहमानों में माननीय Hon. Hillevi Larsson सदस्य संसद सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी, माननीय Hon. Valter Mutt सदस्य संसद ग्रीन पार्टी, माननीय Hon. Annika Lillemets सदस्य संसद ग्रीन पार्टी, माननीय Hon. Bengt Eliasson सदस्य लिबरल पार्टी, और माननीयHon. Mia Sydow सांसद लेफ्ट पार्टी में शामिल थे और ये सभी मेहमान सम्मेलन कक्ष में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ 6 बज कर 45 मिन्ट पर पधारे। मुलाकात की शुरुआत में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने वहां उपस्थित लोगों की उपस्थिति लोगों से उन का हाल पूछा। मेहमानों ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की स्वीडन यात्रा के हवाले से पूछा जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि माल्मो तो पहले ही जा चुका हूँ लेकिन स्टॉकहोम पहली बार आया हूं। उस पर मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने उनका शुक्रिया अदा किया।

एक सांसद जिनका संबंध ग्रीन पार्टी से है उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से निवेदन किया कि हम लंदन में पहले भी मिल चुके हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , ग्रीन पार्टी की संसद में कितनी सीटें हैं? इस पर महोदय ने जवाब दिया कि उसके पास पच्चीस सीटें हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , सोशल डेमोक्रेटिक के साथ आपका गठबंधन क्या है?" इस दोस्त ने जवाब दिया है। इसी प्रकार, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के एक अन्य सदस्य ने कहा कि हम ग्रीन प्राटी के अलावा लाइफ जमाअत के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

ग्रीन पार्टी के सदस्यों को मुस्कुराते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आप देश में हरित क्रांति लाना चाहते हैं? यहाँ तो सब कुछ पहले ही हरा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के यह पूछने पर सभी दोस्त बहुत आनन्दित हुए। इस पर एक औरत सदस्य ने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने बहुत अच्छे समय में स्वीडन का दौरा किया है जब कि बहार शुरु हो चुकी है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि अभी तो पत्ते निकल रहे हैं। मेरा विचार है कि अभी प्रत्येक पौधे पर हरियाली नहीं छाई।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर एक मेम्बर पार्लियामेंट ने कहा कि फरमाया कहा कि संसद में हमारी सीटों की कुल संख्या 349 है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा कि इसका मतलब है कि किसी भी पार्टी को बहुमत

नहीं है। इस पर, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी से संबंधित एक महिला ने जवाब दिया कि यह सही है। हालांकि, ज्यादातर सीटें सोशल डेमोक्रेट के साथ हैं, जो 113 हैं।

उसके बाद संसद की एक महिला सदस्य ने पूछा कि माल्मो में आपका प्रवास कैसा रहा?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमारी मस्जिद का वहां उद्घाटन हुआ था। माल्मो में हमारी जमाअत के सदस्य भी हैं। वे भी मिले। स्वीडन के अन्य हिस्सों से अन्य लोगों के साथ भी मुलाकातें हुईं। मौसम भी बहुत सुखद था। माल्मो में अच्छा समय बिताया।

तब संसद के एक महिला सदस्य ने पूछा कि क्या आप बहुत ज्यादा यात्रा करते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :बहुत अधिक तो नहीं। आप कह सकती हैं कि मैं साल में दो तान महीने यात्रा पर रहता हूं। शायद यह आपके लिए अधिक है लेकिन मेरे निकट बहुत अधिक नहीं है।

बाद में, संसद के एक सदस्य ने सवाल किया कि स्वीडन में आप "मुहब्बत सब के लिए किसी से नफरत किसी से नहीं" की जो तहरीक चलाई है किस सीमा तक सफलता हुई है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह आंदोलन स्वीडन में नहीं बल्कि हर जगह चल रहा है। मुझे लगता है कि यही एक चीज़ है जिसके माध्यम से आप समाज में शांति और सद्भाव को बढ़ावा दे सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इस के परिणाम बहुत खुश करने वाले तो नहीं हैं लेकिन मैं आशावादी हूं। हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना है। यह हमारा लक्ष्य है, और इसके लिए हम कोशिश करना जारी रखेंगे और कभी पीछे नहीं हटेंगे। हम भी शांति बनाए रखने की कोशिश करेंगे और हमारे बाद आने वाली नस्लें भी इस को जारी रखेंगी। हमारा लक्ष्य यही है कि दुनिया को बचाएं और अपनी पीढ़ियों को प्यार, प्रेम और सद्भाव जैसे उच्च मूल्यों का वारिस बना कर जाएं। अगर हमें अपने लिए नहीं हैं, तो हमें अपनी पीढ़ियों के लिए बहुत मेहनत की ज़रूरत है।

फिर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की संसद के एक सदस्य ने सवाल किया कि स्वीडन में कोई युद्ध नहीं है, लेकिन कई अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कई विवादास्पद चीजें हैं। पूर्वाग्रह यहाँ पाया है। अहमिदयों के अलावा, चरमपंथी मुसलमान भी यहां आबाद हो गए हैं, जो आई.एस.आई में जाकर शामिल हो रहे हैं और ऐसी कई समस्याएं हैं। उनका समाधान क्या है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस देश के शहरी होने के नाते सभी को एक दूसरे की इज्जत करनी चाहिए और एक दूसरे के वैध अधिकारों को अदा करना चाहिए और इन्हीं चीजों को आधार बनाकर समस्याओं को हल करना चाहिए चाहे उनकी समस्याओं का संबंध रिफयूजीज़ के साथ हो या स्थानीय लोगों के साथ हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया लेकिन आप यह नहीं कह सकतीं कि स्वीडन युद्ध में शामिल नहीं है क्योंकि अगर खुदा न चाहे तीसरा विश्व युद्ध होता है तो आप भी इसका हिस्सा होंगे। तो यह संकट बहुत बड़ा है। केवल ऐसी बात पर्याप्त नहीं है कि हम दुनिया के एक तरफ हैं, एक छोटा द्वीप हैं। यही कारण है कि हमारा युद्ध के साथ कोई संबंध नहीं है। चूंकि दुनिया अब वैश्विक गांव बन रही है, इसलिए हर देश इसमें आ जाएगा।

संसद के एक सदस्य ने सवाल किया कि आप कहते हैं कि घृणा को हटा दिया जाए। लेकिन यह नफरत कैसे समाप्त हो जब दोनों पक्षों के मतभेद बहुत अधिक और पारस्परिक अन्तर बहुत अधिक हों। मध्य पूर्व और पश्चिम के बीच अंतर है, अमीरों और गरीबों के बीच का अंतर है? यह कैसे किया जा सकता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "यदि आप ठीक तरह से न्याय स्थापित करें तो ये मतभेद अपने आप खत्म हो जाएंगे। अगर हम अपने अधिकारों की मांग करने के बजाय अपने अधिकारों को अदा करने वाले हो जाएं तो शांति स्थापित की जा सकती है। आप यह नहीं कह सकते कि हर स्वीडिश दूसरे स्वीडिश का अधिकार अदा कर रहा है। दुनिया की तरक्की के साथ साथ ही हम ओर लालची हो गए हैं, और इसलिए, दूरी बढ़ रही है। और इसके अलावा, मेरे निकट सब से मुख्य कारण यह है कि हम अपने वास्तविक निर्माता को भुला बैठे हैं। तो यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम इस दुनिया के निर्माता को पहचानें। यह एक बात है और दूसरी यह कि दूसरों को अधिकार अदा करें और उन के साथ प्यार और एक दूसरे से सम्मान करें। लेकिन यह बहुत मुश्किल काम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : देखें यह मानवीय प्रकृति है कि सभी लोग एक बात पर सहमत नहीं हो सकते हैं। ऐसी कुछ चीज़ें हैं जिनसे आप सहमत नहीं हैं। ऐसी कुछ चीजें हैं जिनसे मैं सहमत नहीं हूं। यह एक मानवीय प्रकृति है, लेकिन फिर भी, हमें इन चीजों को शत्रुता का कारण नहीं बनाना चाहिए। यह संभव है कि सगे भाई बहनों के विचार अलग-अलग हों, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे हर समय घर पर लड़ते रहते हैं। कभी-कभी बच्चे भी एक दूसरे से अलग राय रखते हैं, और कभी-कभी वे लड़ रहे हैं लेकिन कभी-कभी ये सामान्य हो जाते हैं। तो कम से कम हम एक दूसरे के विचारों को समझने के लिए मानव मनोविज्ञान के इस पहलू से लाभ उठा सकते हैं और फिर सामान्य हो सकते हैं। यदि आप मुझसे दुर्व्यवहार करें तो मुझे इसे अपने अंत तक इसे सहन करना चाहिए। हो सकता है कि मेरा धीरज आप से कम हो, लेकिन हर किसी को आखिरी सीमा तक सहन करने की ज़रूरत है। कुरआन हमें सिखाता है कि संभव है कि तुम लोगों के बीच मतभेद हो जाएं और यदि ऐसी स्थिति आती है, तो आपके सहयोगियों को चाहिए ऐसे मामलों को हल करवाने का प्रयास करें। लेकिन यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी सहिष्णुता कितनी है? आपके अन्दर दूसरे को अधिकारों को अदा करने का कितना हौसला है? यदि लोगों के बीच कोई मतभेद है तो उनके पास दिमाग़ भी तो है। अगर ऐसी स्थिति सामने आती है, तो इसका इस्तेमाल करें।

इस के बाद संसद की एक महिला सदस्य ने सवाल किया कि, यदि हम दुनिया के विभिन्न समूहों के बीच लड़ाई की समीक्षा करते हैं, तो यदि एक समूह के ऊपर दमन किया जाता है, तो यह एक आवश्यक रूप से बदला लेता है। लेकिन जमाअत अहमदिया की स्थिति इस के बिल्कुल विपरीत है। जमाअत अहमिदया पर अत्याचार किए जा रहे हैं लेकिन वह कोई बदला नहीं लेते हैं, जो बहुत मुश्किल काम है। जमाअत अहमदिया इस तरह का रवैया अपनाने में कैसे सफल रही है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हम पर हमले होते हैं और कुछ जानें भी बर्बाद हो जाती हैं लेकिन इसके बावजूद हम जो खोते हैं उससे कहीं अधिक प्राप्त कर रहे हैं। अब आप अपने दिल में अहमदियत के लिए सहानुभूति रखते हैं क्योंकि हम बदला नहीं लेते हैं। अगर हम बदला लेने वालों में से होते तो आज आपके दिल में अहमदियत के लिए सहानुभूति नहीं होगी। यह हमारी शिक्षा है। हमारे समुदाय के संस्थापक, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने हमें सिखाया है कि यदि आप लोगों के दिल जीतना चाहते हैं, तो आपको अपना सहन करना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह तथ्य की बात नहीं है कि हम पूरी तरह प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। हम प्रतिक्रिया करते हैं, लेकिन अपने हाथों में कानून नहीं लेते हैं।

इसके बाद एक संसद की महिला सदस्य ने सवाल किया कि इस प्रकार सहन करने के बारे में आप राजनेताओं को क्या नसीहत करना चाहेंगे कि वे भी अपने अन्दर बर्दाशत बढ़ाएँ।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इस्लाम धर्म के संस्थापक नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें एक बहुत ही सुन्दर नियम बताया है कि जो अपने लिए पसंद करते हो वही अपने भाई की लिए पसन्द करें। अगर किसी चीज़ को अपने लिए बुरा या अच्छा समझते हैं तो दूसरों के लिए भी वही भावनाएं होनी चाहिए। इस से आप के अन्दर सहन करने की शक्ति पैदा होगी।

तब संसद के एक सदस्य ने पूछा कि क्या आप समझते हैं कि आपकी शिक्षाओं को सुनने वालों में वृद्धि हो रही है? और वे बढ़ रहे हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : बिल्कुल वृद्धि हो रही है बड़ी संख्या में लोग हमारी शिक्षाओं की सराहना करते हैं, और यही कारण है कि आप यहां मौजूद हैं। यहां एक बहुत बड़ी संख्या है चाहे वे हम में शामिल हों या न हों, लेकिन वे हमारी शिक्षाओं को पसंद करते हैं। लेकिन कभी-कभी कुछ लोग के लिए रोक होती हैंजिस केकारण वे इलान कर के हमारी शिक्षाओं के अपनाते नहीं हैं परन्तु दिल में वे हमारी शिक्षाओं का सम्मान करते हैं।

स्वागत समारोह

संसद का सदस्यों के साथ यह मीटिंग सवा सात बजे तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला होचल का हाल में पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के आने से पहले सारे, सभी मेहमान

अपनी सीटों पर बैठे थे। समारोह का आरम्भ कुरआन की तिलावत के साथ शुरू हुआ। आदरणीय ज़हीर अहमद चौधरी साहिब ने तिलावत की और आदरणीय मुतीउर्ररहमान साहिब ने इस का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया।

इस के बाद आदरणीय मामूनुर्रशीद साहिब अमीर जमाअत स्वीडन ने अपना स्वागत ख़िताब पेश किया और मेहमानों का स्वागत किया।

इसके बाद कुछ मेहमान हज़रात ने अपने सम्बोधन भी पेश किए, जिनमें सबसे पहले सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी से संबंध रखने वाली सदस्य मेम्बर आफ संसद Hillevi Larsson ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा:

मुझे मस्जिद माल्मो देखने का मौका मिला है, बहुत ही सुन्दर इमारत है और जब आप मस्जिद में प्रवेश करते हैं और अहमदिया जमाअत से मिलें तो आपको प्यार, सहनशक्ति और शांति का संदेश प्राप्त होगा। मैं ख़ुद इस मस्जिद में गया हूं और ख़लीफतुल मसीह से मिला हूं। यह न केवल एक सुन्दर इमारत है बल्कि एक सुन्दर संदेश के लिए हुए भी है। मुझे लगता है कि यह वह संदेश है जिसकी वर्तमान अवस्था में दुनिया को बहुत ज़रूरत है। संसार में युद्ध, ईर्ष्या, घृणा, भ्रष्टाचार और समूहों के बीच मतभेद आम हैं। यह संदेश वास्तव में इन बातों के विपरीत है, और हमें इस संदेश को अपनाना चाहिए और इस अंधेरे ज़माने में ख़लीफा ही हैं जो उम्मीद की किरण हैं।

महोदया ने कहा: एक बात जो मुझे समझ में नहीं आई वह यह है कि ख़लीफा तो दुनिया में जगह जगह शन्ति का सन्देश पहुंचा रहे हैं और इस्लाम की शांति के संदेश को फैला रहे हैं और अन्य मुसलमान इतना ही आप लोगों का विरोध कर रहे हैं। मैंने सोचा था कि जितना अधिक इस संदेश को फैलाएंगे, उतने लोग आपके करीब आ जाएंगे, लेकिन आश्चर्य की बात है कि लाहौर 2010 ई की त्रासदी हो गई और 70 लोग शहीद हो गए। इस तरह की त्रासदी के बाद भी यह मेरे लिए एक आश्चर्यजनक बात है, और मैं इसे अपने अन्य मित्र-दोस्तों के साथ उल्लेख करता हूं कि आप किसी भी प्रकार का बदला नहीं लेना चाहते हैं।

महोदया ने कहा: "यह तो एक प्राकृतिक बात है और इतिहास हमें बताता है कि जिन लोगों पर अन्याय होते हैं, वे बदला लेने की कोशिश करते हैं, जितना अत्याचार किया जाता है, उतना ही ख़तरा बढ़ता जाता है कि वैसा ही बदला लिया जाएगा। अगर पीड़ित कमज़ोर भी हो तब भी बदला लेने की भावना बनी रहती है तब किसी इस प्रकार के क़ौमों को ताकत प्राप्त होती है तो वे अत्याचारी बन जाती हैं। परन्तु मैं देखती हूं कि जमाअत अहमदिया इस से भिन्न है। जितना भी आप नफरत करते हैं वह उतना ही प्यार करते हैं। जितना भी आप उन से लड़ें, उतना ही आपको शांति मिल जाएगी। मैं आश्चर्यचकित हूं और इस बात से बहुत प्रभावित हूं। मुझे लगता है कि आपसी मतभेदों के लिए भी अहमदियों के इस किरदार में बहुत महत्त्वपूर्ण संदेश है, क्योंकि दुनिया में कई धर्म हैं और ख़लीफतुल मसीह ने हमें बताया है कि हम इन सभी धर्मों के बावजूद शांतिपूर्वक रह सकते हैं। हमें एक साथ एकजुट होना है और मिल जुल कर इस दुनिया को एक साथ बेहतर स्थान बनाना है।

महोदया ने कहा: मैं पहले भी अहमदियों से मिली हूं लेकिन ख़लीफा से मिलना बहुत प्रभावशाली है। आप जितने अहमदियों से मिले हैं, आपको एक ही इंप्रेशन मिलता है कि ये बहुत अच्छे लोग हैं। जब आप ख़लीफतुल मसीह से मिलें तो आप और अधिक जानेंगे। इतना ही आपको अंदाज़ा होगा कि इस जमाअत में कणमात्र भी बुराई नहीं है। यह तो अच्छाई ही अच्छाई है।

महोदया ने कहा कि: ख़लीफा और उनकी जमाअत की एक अच्छी बात और है कि आप केवल अच्छाई और अमन की बात नहीं करते बल्कि इसे कर के भी दिखाते हैं। और यह बहुत ही अच्छी बात है कि जो कहा जाए वह कर के भी दिखाया जाए। ख़लीफा शांति सम्मेलनों में भी संबोधित करते हैं जहां दुनिया भर के संसद के सदस्य भाग ले सकते हैं और सीख सकते हैं। वहां भी शान्ति पुरस्कार दिया जाता है। ख़लीफतुल मसीह एक इंसान के रूप में शान्ति के इतने काम कर रहे हैं और आप जब जा जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का हिस्सा हैं ख़लीफा की सन्देश के दूत हैं।

महोदया ने कहा: मैं व्यक्त करना चाहती हूं कि मैं माल्मो में कई अहमदियों को जानती हूं, यह अहमदी समाज का एक सक्रिय हिस्सा है। सड़क की सफाई नए साल के लिए एक शानदार काम है। प्रत्येक उस समय थका हुआ होता है,रात देर तक आतिशबाजी और खेल तमाशा होता रहता है और सुबह सोए हुए रहते हैं। उस समय, जमाअत अहमदिया के लोग बाहर निकलते हैं और सड़कों को साफ करते हैं और उन्हें फिर से सुन्दर बनाते हैं। यह भी एक प्यार की अभिव्यक्ति है। हमें निकट लाने का माध्यम और पारस्परिक सद्भाव और शांति लाने का साधन है।

महोदया ने अपने संबोधन के अंत में कहा: "मैं इस शांति, प्रेम, धीरज, पारस्परिक सम्मान, विनम्रता और मानव सेवा के संदेश को फैलाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगी।

फिर, ग्रीन पार्टी, से सम्बन्ध रखने वाले संसद के सदस्य वाल्टर मट साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया।

महोदय ने कहा आपको शुभकामनाएं: आज मुझे आमंत्रित करने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मैं कहना चाहता हूं कि सबकुछ शन्ति से संभव है। शांति के बिना, कोई उद्देश्य हासिल नहीं किया जा सकता है और आशा भी जाती रहती है। लेकिन अगर हमारे दिल में शांति स्थापित है, लोगों और राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित है, तो हम दुनिया को बचा सकते हैं। हम मानवता और अन्य सुन्दर सृष्टि को बचा सकते हैं।

महोदय ने अपने संबोधन में कहा: आपकी शांति का संदेश और "मुहब्बत सब के लिए घृणा किसी से नहीं है। का सन्देश बहुत शानदार है और ग्रीन पार्टी के सदस्य के रूप में, मेरा मिश्न का आरम्भ इस संदेश से शुरू होता है और मैं सम्माननीय ख़लीफा और आप सभी का शुक्रिया अदा करता हूं। मेरी इच्छा है कि स्वीडन में एक शांति का मंत्री होना और शांति विभाग स्थापित किया जाना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश, दुनिया के केवल चार छोटे देशों शान्ति के मिनस्टर हैं। उन में से एक कोस्टा रिका और शेष तीन छोटे प्रशांत द्वीप समूह से देश हैं। और मुझे ख़ुशी है कि ख़लीफा ने मेरा समर्थन किया है।

महोदय ने कहा: जिस तरह मुझ से पहले हिलेवी ने कहा है, मैं अहमदियों को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। आप समाज की सेवा करते हैं। हर राष्ट्रीय दिन, आप हमें आमंत्रित करते हैं और हमारे साथ एकजुटता व्यक्त करते हैं।

महोदय ने कहा: एक राजनेता के रूप में, मुझे पता है कि यहां बहुत बुरे लोग भी हैं। खराब परिवेश हैं। बुरे घर हैं। बुरी प्रणाली है । मैं बहुत से मुद्दे देखता हूं, लेकिन प्रत्येक स्थान पर इतने उच्च गुणों वाले लोग भी मौजूद हैं। आप बहुत से अच्छे काम करते हैं। मेरी नज़र में आगे बढ़ने का यही तरीका है। यह सभी मानवता के लिए आगे बढ़ना का रास्ता है। मुझे बहुत ख़ुशी है कि न केवल मुझे इस कार्यक्रम पर बुलाया गया है, बल्कि बड़ी संख्या में कार्यक्रमों में, मुझे नियमित रूप से आमंत्रित किया जाता है।

महोदय ने कहा: बहुत सी बुरी चीजें हैं जो कि वैश्विक रूप धारण कर गई हैं। ताकत और युद्ध और घृणा वैश्विक रूप धारण कर चुकी हैं। यह समय है "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं और वैश्विक स्तर पर एकता को उजागर किया जाए। आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।

इसके बाद, लिबरल पार्टी के एक सदस्य बेंगल एलियसन ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा: हम ईसाई, मुस्लिम, यहूदी, हिंदू, अन्य धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले और नास्तिक आपस में एक ही क़ौम हैं। हम अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं और विभिन्न संस्कृतियों से संबन्ध रखते हैं। और चूंकि हमें जंग तथा झगड़े के दर्द का सामना कर चुके हैं और क्योंकि हम अंधेरे युग को पीछे छोड़ देना चाहते हैं, इसलिए सिवाय एक के कि हम यह विश्वास रखें कि नफरत के यह सारे पुराने रिवाज एक दिन समाप्त हो जाएंगे। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। जैसे-जैसे दुनिया छोटी होती जा रही है, हमारे सामान्य मानवीय मूल्य उजागर हो रहे हैं और हम एकजुट और स्थिर बनकर शांति का एक नया युग शुरू करेंगे। हमें प्रगति के लिए एक नया दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है, जो पारस्परिक हितों और सम्मान पर आधारित हो।

महोदय ने कहा: पूर्व या पूर्व में दुनिया के सभी नेता, जो फसाद बढ़ा रहे हैं और अपने समाज में बुराई फैला रहे हैं, उन्हें बताएं कि आने वाले लोग अपने विनाश के बजाय, उनके सकारात्मक कामों के कारण उनको जानेंगे।

महोदय ने कहा आऐं आज की शाम यह सोचें कि हम कौन हैं और अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए कचिना सफर कर चुके हैं। आइए आज की शाम इस प्रोग्राम को शांति, धीरज, लोकतंत्र और न्याय के नाम करें।

महोदय ने कहा: अहमदिया मुस्लिम जमाअत का बहुत बहुत धन्यवाद जिन्होंने मुझे यहां आने के लिए आमंत्रित किया और मुझे शांति के इस प्रयास में शामिल किया। मैं ख़लीफा को स्वीडन आने के लिए मैं बहुत बहुत धन्यवाद करता हूं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 4 October 2018 Issue No. 40

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ईमामुज़्ज़मान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"मैं इस समय बे-धड़क कहता हूँ कि ख़ुदा के फज़ल और रहम से वह इमामुज़मान मैं हूँ और मुझ में ख़ुदा तआला ने वे सारी अलामतें और शर्तें जमा की हैं और इस सदी के सर पर मुझे भजा है याद रहे कि इमामुज़्ज़मान के शब्द में नबी , रसूल , मुहद्दिस , मुजद्दिद सब दाख़िल हैं। मगर जो लोग इरशाद और हिदायत ख़लकुल्लाह के लिए मामूर नहीं और ना वह कमालात इनको दिए गए अगर वह वली हों या इबदाल हों , इमामुज़मान नहीं कहला सकते।"

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 13 सफा 495 मबतुआ 1984 ई लन्दन)

"अब एक ज़रूरी प्रश्न यह है कि इमामुज़्ज़मान किस को कहते हैं और इसकी निशानी क्या है और इसको दूसरे मलहमों और ख़वाब बीनों और अहले कशफ पर तरजीह क्या है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि इमामुज़्ज़मान उस व्यक्ति का नाम है जिसकी रूहानी तरबीयत का ख़ुदा तआला मुतवली हो कर इसकी फितरत में एक ऐसी इमामत की रोशनी रख देता है कि वह सारे जहाँ के मअकूलियों और फलसफियों से हर रंग में मुबाहसा करके इनको मग़लूब कर लेता है। वह हर एक किस्म के दकीक दर दकीक ऐतराज़ात का ख़ुदा से ताकत पाकर ऐसी अच्छाई से उत्तर देता है कि आख़िर मानना पड़ता है कि इसकी फितरत दुनिया की इस्लाह का पूरा समान लेकर इस मुसाफिर खाना में आई है। इस लिए इसको किसी दुश्मन के सामने शर्मिन्दा होना नहीं पड़ता। वह रूहानी तौर पर मुहम्मदी फौजों का सिपासलार होता है। और ख़ुदा तआला का इरादा होता है कि इसके हाथ पर दीन(धर्म) की दोबारा जीत करे। और वह सारे लोग जो इसके झंडे के नीचे आते हैं इनको भी ऊँचे दरजे की ताकत दे। और वे सारी शर्तें जो इस्लाह के लिए ज़रूरी होती हैं और वे सारे अलूम जो ऐतराज़ात के उठाने और इस्लामी ख़ूबियों के पेश करने के लिए ज़रूरी हैं इसको दिए जाते हैं।"

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 13 सफा 476-477 मबतुआ 1984 ई लन्दन)

ख़लीफातुल्लाह

"मैं बैतुल्लाह में खड़े होकर यह कसम खा सकता हूँ कि वह पाक वह्यी जो मेरे पर उतरी होती है वह इसी ख़ुदा का कलाम है जिसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम उतारा था। मेरे लिए धरती ने भी गवाही दी और आसमान ने भी। इसी तरह मेरे लिए आसमान भी बोला और धरती भी कि मैं ख़लीफातुल्लाह हूँ।"

(एक ग़लती का इज़ाला रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 18 सफा 210 मबतुआ 1984 इ० लन्दन)

फरिशतों का उतरना और कामयाबी की बिशारत

"चूंकि यह आजिज़ रास्ती और सच्चाई के साथ ख़ुदा तआला की तरफ से आया है इसलिए तुम सदाकत के निशान हर एक तरफ पाओगे। वह समय दूर नहीं बल्कि बहुत नज़दीक है कि जब तुम फरिशतों की फौजें आसमान से उतरती और एशिया और यूरोप और अमरीका के दिलों पर उतरते हुए देखोगे। यह तुम कुर्आन शरीफ से मालूम कर चुके हो कि ख़लीफातुल्लाह के उतरने के साथ फरिशतों का उतरना ज़रूरी है ताकि दिलों को हक की तरफ फेरे। इसलिए इस निशान का इंतज़ार करो। अगर फरिशतों का उतरना ना हुआ और इनके उतरने के स्पष्ट प्रभाव तुम ने दुनिया में न देखे और हक की तरफ दिलों की हरकत को न पाया तो तुम समझना कि आसमान से कोई नाज़िल न हुआ। लेकिन अगर ये सब बातें ज़ुहूर में आ गईं तो तुम इन्कार से बाज़ आओ। ताकि तुम ख़ुदा तआला के नज़दीक एक सरकश क़ौम ने ठहरो।"

(फत्ह इस्लाम रूहानी ख़ज़ान जिल्द 3 पृष्ठ 13 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

यही है ईसा जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। इल्हामी इबारतों में मरयम और ईसा से अभिप्राय मैं ही हूं, मेरे ही विषय में कहा गया कि हम उसे निशान बना देंगे और यह भी कहा गया कि यह वही ईसा इब्ने मरयम है जो आने वाला था, जिसके विषय में लोग सन्देह करते हैं । पर सत्य यही है और आने वाला यही है और संदेह, मात्र मूर्खता के कारण है जो ख़ुदा के रहस्यों को नहीं समझते । ये शक्लों के पुजारी हैं वास्तविकता पर उनकी दृष्टि नहीं ।

हाशिया:: इस इल्हाम पर मुझे याद आया कि बटाला में फज़ल शाह या मेहर शाह नामक एक सय्यद थे। जो मेरे पिता जी से बहुत मुहब्बत रखते थे और बहुत सम्बन्ध था। जो मेरे दावा मसीह मौऊद होने की किसी ने उन को ख़बर दी तो वह बहुत रोए और कहा कि उन के पिता जी बहुत अच्छे आदमी थे परन्तु यह शख्स किस पर पैदा हुआ उन का बात तो नेक मिज़ाज़ और झूठ के कामों से दूर और सीधा और साफ दिल मुसलमान था इसी प्रकार बुहतों ने कहा कि तुम ने अपने ख़ानदान को दाग़ लगा दिया कि इस प्रकार का दावा किया। इसी से।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 47 से 50)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad